# घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 23, अंक - 11- शुक्रवार 13- नवम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028


## पंजाब में आप उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट में 31 नाम

### एक मंत्री और 7 विधायकों के टिकट काटे 2 सांसद विधानसभा चुनाव लड़ेंगे...

**चंडीगढ़,12 नवम्बर 2026।** पंजाब में आम आदमी पार्टी ने विधानसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। इसमें 31 नाम हैं। 2 सांसदों को भी टिकट दिया गया है। इनमें संगरूर से सांसद गुरमीत सिंह मीत हेयर को बरनाला से और होशियारपुर से सांसद डॉ. राज कुमार चब्बेवाल को फगवाड़ा से उम्मीदवार बनाया गया है। चब्बेवाल के विधायक बेटे इशांक चब्बेवाल को आम आदमी पार्टी पहली लिस्ट में टिकट दे चुकी है। इससे पहले 31 अक्टूबर को 40 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की गई थी। इसमें सीएम भगवंत मान समेत सभी मौजूदा विधायकों को दोबारा टिकट दिया गया था। पार्टी अब तक कुल 71 उम्मीदवारों के नाम घोषित कर चुकी है। आम आदमी पार्टी ने दूसरी लिस्ट में कृषि मंत्री गुरमीत सिंह खुड्डियां की लंबी विधानसभा सीट से टिकट काट दी है। 2022 के चुनाव में उन्होंने 5 बार के मुख्यमंत्री रहे अकाली नेता प्रकाश सिंह बादल को हराया था। उनकी सीट से अब उनके भतीजे रणधीर सिंह धीरा को टिकट दी गई है। आम आदमी पार्टी ने खरड़ से विधायक व पंजाबी अभिनेत्री अनमोल गगन मान समेत 7 विधायकों को टिकट नहीं दी। अन्य विधायकों में बठिंडा देहात से अमित रतन कोटफत्ता, पट्टी से जेल में बंद रूरलालजीत भुल्लर,जालंधर सेंट्रल से रमन अरोड़ा, शुतराणा से कुलवंत बाजीगर, चमकौर साहिब में सीएम चरणजीत चन्नी को हराने वाले डॉ. चरणजीत सिंह और अमृतसर नॉर्थ से कुंवर विजय प्रताप को टिकट नहीं दी गई। कुंवर पहले ही बीजेपी में शामिल हो चुके हैं।



## अरुणाचल : भयावह आग में झुलकर तीन बच्चे एवं एक महिला समेत 4 की मौत

**इटानगर,12 नवम्बर ।** अरुणाचल प्रदेश के कुरुंग कुमे जिले के पारसी पारलो में गुरुवार तड़के लगी भयावह आग में तीन बच्चों और एक महिला समेत चार लोगों की मौत हो गई। इस घटना में कम से कम 24 घर और दुकान जलकर राख हो गए। मृतकों की पहचान डोंगडा यानु (महिला) मां, डोंगडा करसांग (नाबालिग) पुत्र, डोंगडा माजी (नाबालिग) पुत्र और डोंगडा अमजी (नाबालिग) पुत्री के रूप में हुई है। वहीं इस हादसे में एक व्यक्ति गंभीर रूप से झुलस गये हैं, जिनकी पहचान डोंगडा ताजी (पुरुष) पिता के रूप में हुई है। मृतक एवं घायल सभी एक ही परिवार के बताये गये हैं। कुरुंग कुमे जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी के अनुसार, आग सुबह करीब 2 बजे के आसपास लगी। देखते ही देखते आग तेजी से कई घरों में फैल गई। इससे रिहायशी संपत्तियों को भारी नुकसान पहुंचा है। हादसे में 19 घर पूरी तरह से जलकर नष्ट हो गए हैं। जबकि 5 घरों को आंशिक नुकसान पहुंचा है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक,आशंका है कि आग रसोईघर से शुरू हुई थी। हालांकि,आग लगने के सही कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। बताया कि पारसी पारलो में कोई फायर स्टेशन नहीं है। वहीं, कोलोरियांग में तैनात दमकल गाड़ी अपनी खराब हालत के कारण समय पर प्रभावित इलाके तक नहीं पहुंच सकी। आग बुझाने के लिए तत्काल मदद न मिल पाने के कारण आग पर काबू पाने के प्रयासों में बाधा आई। इस बीच,मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने कुरुंग कुमे जिले के पारसी पारलो सर्कल में हुई इस भीषण आग की घटना पर गहरा दुख जताया है। इस घटना ने कई परिवारों को बेघर कर दिया है और स्थानीय समुदाय को भारी संकट में डाल दिया है।



## विद्यार्थी रोजगार सृजनकर्ता बनें ज्ञान से अवसर पैदा करें : राष्ट्रपति मुर्मु



**नई दिल्ली,12 नवम्बर 2026।** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गुरुवार को कहा कि विद्यार्थियों का लक्ष्य अपने ज्ञान के माध्यम से रोजगार के अवसर सृजित करने का भी होना चाहिए। इससे देश के समावेशी विकास को और गति मिलेगी। उन्होंने विद्यार्थियों से ऊंचे लक्ष्य रखने और लगन, अनुशासन तथा आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों को पूरा करने का प्रयास करने का आग्रह किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने आज राष्ट्रपति भवन में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के मेधावी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा, 'शिक्षा केवल आजीविका कमाने का साधन नहीं होना चाहिए बल्कि, विद्यार्थियों का लक्ष्य अपने ज्ञान के माध्यम से रोजगार के अवसर सृजित करने का भी होना चाहिए। जब हमारे युवा रोजगार सृजनकर्ता बनेंगे, तब देश के समावेशी विकास को और गति मिलेगी। विद्यार्थी समसामयिक घटनाओं और देश-दुनिया में हो रहे बदलावों के बारे में अवगत रहें। इससे उन्हें तार्किक सोच और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी। जब भी विद्यार्थी अपने गांव जाएं, अपने परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ समसामयिक घटनाओं और सरकार द्वारा चलाई जा रही जन-कल्याणकारी योजनाओं के बारे में की जानकारी साझा करें। उनके इस प्रयास से परिवार और समाज लाभान्वित होगा तथा उनकी शिक्षा की सार्थकता बढ़ेगी।

## मोदी बोले- 50 करोड़ गरीबों ने गरीबी को हराया,बीते दशक में कृषि विकास दर 4% से ज्यादा रही,आजादी के बाद पहली बार ऐसा हुआ

**नई दिल्ली,12 नवम्बर 2026।** पीएम मोदी ने कहा, 'खेती को स्मार्ट किए बिना, किसान को सशक्त किए बिना ये संभव नहीं है। खेती और देश की प्रगति में संबंध को इस तरह समझ सकते हैं। गरीबी को लेकर वर्ल्ड बैंक की स्टडी आई। इसमें बताया गया कि भारत के 50 करोड़ गरीबों ने गरीबी को मात दी। उन्होंने बताया कि गांवों में बहुत तेजी से गरीबी घटी है। संयोग देखिए, बीते दशक में भारत में कृषि की विकास दर 4% से ज्यादा रही। ये आजादी के बाद पहला देश है, जब एग्रीकल्चर सेक्टर ने इतनी ग्रोथ हासिल की। इसी दौरान गांवों में बड़ी संख्या में गरीबों ने गरीबी को हराया है। पीएम ने यह बात इंडिया टुडे ग्रुप के भारत एग्रीकल्चर कॉन्फ्रेंस 2026 में कही। दो दिवसीय सम्मेलन दिल्ली के भारत मंडपम में हुआ। इसमें 2,000 से ज्यादा किसान, नीति निर्माता, उद्योग जगत के प्रतिनिधि और ग्लोबल एक्सपर्ट्स शामिल हुए।

### मीडिया से प्रधानमंत्री मोदी का आह्वान,2047 तक विकसित भारत बनाने में निभाएं अहम भूमिका

# देश की उपलब्धियों,प्रतिभाओं और सकारात्मक कहानियों को विश्व पटल तक पहुंचाये मीडिया : प्रधानमंत्री मोदी

**नई दिल्ली,12 नवम्बर 2026।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मीडिया जगत से देश की सफलता से जुड़ी कहानियों को दुनिया तक पहुंचाने की अपील की। उन्होंने कहा कि विकास की राह पर आगे बढ़ रहे हमारे देश की उपलब्धियों, प्रतिभाओं और सकारात्मक कहानियों को विश्व पटल पर जगह मिलनी चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने आज भाजपा केन्द्रीय कार्यालय में मीडिया के लिए आयोजित दीपावली मिलन समारोह में उक्त बातें कहीं।

इस दौरान भाजपा अध्यक्ष नतीन नवीन, केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, अमित शाह और जेपी नड्डा मंच पर उपस्थित थे। उन्होंने मीडिया जगत में समाचार भेजने और प्रसारित करने की समयसीमा का उदाहरण दिया। इसके माध्यम से उन्होंने कहा कि व्यक्ति, संस्था और देश पर भी समयसीमा लागू होती है। इसी को देखते हुए देश ने आज अपने लक्ष्यों को समयसीमा में बांध दिया है। 2047 तक हमें देश को विकसित बनाना है। उनका मानना है कि इसे पाना मुश्किल नहीं है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को मीडिया जगत से भारत की उपलब्धियों और देशवासियों की सफलता की कहानियों को प्रमुखता से सामने लाने की अपील की। उन्होंने कहा कि 2047 तक विकसित भारत बनाने का लक्ष्य केवल सरकार का नहीं बल्कि पूरे देश का संकल्प है। इस अभियान में मीडिया की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि लक्ष्यों को पूरा करने का समय तय करने से काम की प्राथमिकता, तरीका और रफ्तार बदल जाती है। आजादी के संघर्ष का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि शुरुआत में छोटे लक्ष्यों से आगे बढ़ा जाता है। इन छोटे-छोटे लक्ष्यों को पूरा कर आज देश विकसित भारत की ओर आगे बढ़ रहा है। इस दौरान उन्होंने पिछले 12 सालों में उनकी सरकार की उपलब्धियां गिनाई और कहा कि अगर देश 12 साल के अंदर 50 करोड़ से अधिक लोगों का अत्यंत गरीबी की से बाहर निकाल सकता है तो 20 सालों में देश विकसित बनाना कठिन कार्य नहीं है। मीडिया के साथ अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि हाल ही में उन्होंने शासनाध्यक्ष के तौर पर 25 वर्ष पूरे किए हैं। इन 25 सालों में उन्होंने प्रेस रिलीज से लेकर रील तक का सफर देखा है। उन्होंने मीडिया खासकर फील्ड रिपोर्टर के कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर दिल्ली भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश में विकास की रोशनी आज हर घर तक पहुंचाई है। आज दीपावली का पर्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है। इसमें प्रधानमंत्री के भारत की संस्कृति और विरासत को दुनियाभर में ले जाने के प्रयासों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

### युवाओं को नशे से बचाने में भी मांगा सहयोग

प्रधानमंत्री ने नशे की समस्या पर चिंता जताते हुए मीडिया से इस दिशा में जागरूकता अभियान चलाने की अपील की। उन्होंने कहा कि देश के युवाओं को नशे की गिरफ्त से बाहर निकालना बेहद जरूरी है। जब मीडिया सामाजिक सरोकारों और देश में एकता बढ़ाने वाले विषयों को अपने मंचों और बहसों में जगह देगा, तब विकसित भारत के अभियान को और गति मिलेगी।

### भारत की सफलता की कहानियां दुनिया तक पहुंचाए

मीडिया प्रधानमंत्री मोदी ने मीडिया जगत से आग्रह किया कि वह भारत की उपलब्धियों और आम नागरिकों की सफलता की कहानियों को प्रमुखता से सामने लाए।




### 2047 तक विकसित भारत बनाने का लक्ष्य

प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस तरह पत्रकारों के जीवन में डेडलाइन का महत्व होता है, उसी तरह देश भी अब एक निश्चित समयसीमा के साथ आगे बढ़ रहा है। यह समयसीमा 2047 है,जब भारत की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का सपना आजादी के समय से देश के साथ रहा है लेकिन अब इस सपने को पूरा करने की एक निश्चित तारीख तय है। हमें आजादी के 100 वर्ष पूरे होने से पहले भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है। हमें अभी से छोटे-बड़े लक्ष्य तय करके उन्हें पूरा करना होगा। चंद्रयान से मोबाइल निर्माण तक गिनाईं उपलब्धियांप्रधानमंत्री ने भारत की वैज्ञानिक, तकनीकी और आर्थिक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि देश ने बीते वर्षों में कई ऐसे काम किए हैं, जिनकी कभी कल्पना भी मुश्किल थी। उन्होंने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास भारत की सफल लैंडिंग, दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता बनने, चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज बनाने और सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता में 50 गुना से अधिक वृद्धि जैसी उपलब्धियों का जिक्र किया।

### प्रधानमंत्री ने भारतीय पर्व को दिलाई वैश्विक पहचान : नितिन नवीन

इस मौके पर भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर साल देश के जवानों के साथ दिवाली मनाते हैं। इस बार नक्सलवाद के खात्मे के बाद बस्तर में नकसलवाद से प्रभावित लोगों के साथ दिवाली मिलन कार्यक्रम में सम्मलित हुए। उन्होंने कहा कि वर्ष 2015 के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने दिवाली के पर्व को वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति की पहचान बनाने का काम किया है। योग को वैश्विक पहचान दिलाने के साथ-साथ भारतीय त्योहारों और परंपराओं को भी दुनिया के सामने मजबूती से प्रस्तुत किया गया है। नितिन नवीन ने कहा कि प्रधानमंत्री के 'वोकल फॉर लोकल' के आह्वान से भारतीय उत्पादों, परंपराओं और संस्कृति को नई पहचान मिल रही है। सरकार की योजनाओं के माध्यम से हर घर तक रोशनी और विकास की सुविधाएं पहुंच रही हैं।

## वायु सेना कमांडर कामिकेज ड्रोन ऑपरेशंस के लिए हमेशा तैयार रहें : राजनाथ सिंह

**नई दिल्ली,12 नवम्बर 2026।** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को सेनाओं से आग्रह किया कि वे 'एलीमेंट ऑफ सरप्राइज' को मजबूत बनाए रखें,ताकि तेजी से हो रही टेक्नोलॉजी में तरक्की और मॉडर्न युद्ध की बदलती प्रकृति से पैदा होने वाले पारंपरिक और नए खतरों के खिलाफ ऑपरेशनल तैयारी बनी रहे। उन्होंने इंटेलिजेंस और सर्विलांस क्षमताओं को लगातार मजबूत करने, सिस्टम के बीच इंटीग्रेशन बढ़ाने और संभावित खतरों को सामने आने से पहले पहचानने की जरूरत पर भी जोर दिया। साथ ही ऑपरेशन, एडमिनिस्ट्रेशन और एयरोस्पेस सुरक्षा के लिए विकसित एआई एप्लिकेशन भी लॉन्च किए। नई दिल्ली में एयरफोर्स कमांडर्स कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए उन्होंने निगरानी और काउंटर-ड्रोन अभियानों को लेकर उच्चस्तर की तैयारी रखने के निर्देश दिए हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि हमारी डिफेंस फोर्स को ऐसी काबिलियत और तरीके बनाने चाहिए,जिनसे दुश्मन को रिएक्ट करने या संभलने का समय ही न मिले और यह भी पक्का करना चाहिए कि दुश्मन की किसी अचानक हरकत से हम कभी हैरान न हों। सरप्राइज कई तरह से हो सकता है,पारंपरिक और इलेक्ट्रॉनिक दोनों तरह से। हमारे इंटेलिजेंस और सर्विलांस सिस्टम को और मजबूत करना होगा और ऑपरेशनल तैयारी को बढ़ाना होगा ताकि यह पक्का हो सके कि हमारे लोग किसी भी नई चुनौती का असरदार तरीके से जवाब देने के लिए अलर्ट, फुर्तीले और तैयार रहें। राजनाथ सिंह ने कहा कि आजकल की लड़ाइयां पारंपरिक लड़ाई के मैदानों से आगे बढ़कर नॉन-कॉन्टैक्ट डोमेन तक फैल रही हैं, जिसमें मिसाइल, ड्रोन और एडवांस्ड वेपन सिस्टम अहम भूमिका निभा रहे हैं।



## निवेशकों को राजनीतिक प्रतिशोध से बचाने के लिए राष्ट्रीय कानून बने : चंद्रबाबू नायडू

**विशाखापत्तनम, 12 नवम्बर 2026।** आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने गुरुवार को घोषणा करते हुए कहा कि राज्य सरकार राजनीतिक प्रतिशोध से निवेशकों की सुरक्षा के लिए 'निवेश संरक्षण अधिनियम' लाएगी।

उन्होंने केंद्र सरकार से भी देशभर के निवेशकों को अधिक सुरक्षा और विश्वास प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर इसी तरह का कानून लाने का आग्रह किया। चंद्रबाबू नायडू ने साझा किया कि जून 2024 से अबतक आंध्र प्रदेश को 22.6 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इनमें से 73 प्रतिशत प्रतिबद्धताएं स्वीकृत परियोजनाओं में बदल चुकी हैं। इन परियोजनाओं की कुल लागत 17.2 लाख करोड़ रुपये है और इनसे 12.7 लाख लोगों के लिए रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। उन्होंने बताया कि इनमें से 51 प्रतिशत परियोजनाएं जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन के चरण में पहुंच चुकी हैं। 5.9 लाख करोड़ रुपये की लागत वाली परियोजनाओं का निर्माण कार्य शुरू हो गया है, जिनमें 7.4 लाख नौकरियां पैदा करने की क्षमता है।




## हनीट्रैप विवाद : एनवीडिया के सीईओ जेन्सन हुआंग का इस्तीफा

**नई दिल्ली,12 नवम्बर 2026।** हनीट्रैप प्रकरण में नाम आने के बाद एनवीडिया के सीईओ जेन्सन हुआंग ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। वे 1993 से इस पद पर थे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चिप बनाने वाली दुनिया की दिग्गज टेक कंपनी एनवीडिया इस समय अपने सबसे बड़े नेतृत्व संकट से जूझ रही है। कंपनी के कोफाउंडर और 1993 से सीईओ रहे जेनसन हुआंग के खिलाफ कथित व्यक्तिगत संबंधों और जासूसी से जुड़े आरोपों के बाद बोर्ड की ओर से उन्हें हटाए जाने की चर्चाओं के बीच पद छोड़ा है। उन्हें करीब 33 साल बाद अपना पद छोड़ना पड़ा है। उनके उत्तराधिकारी कौन होंगे? इस पर पूरी दुनिया की नजर बनी हुई है। यह खबर दो कथित विवाहेतर संबंधों के खुलासे के बाद आई है। इनमें से एक संबंध एक ऐसी कारोबारी महिला से जुड़ा है, जिसका अमेरिकी खुफिया एजेंसियों को चीनी खुफिया एजेंसी से संबंध होने का शक है।

द वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार, एनवीडिया का बोर्ड हुआंग के भविष्य पर चर्चा के बाद उनके इस्तीफे का फैसला लिया गया। 63 वर्षीय हुआंग पर उनके व्यक्तिगत संबंधों और कंपनी के लिए उनके संभावित प्रभावों को लेकर जांच बढ़ गई है। हुआंग ने 1993 में एनवीडिया की सह-स्थापना की थी।

## संसद का विशेष सत्र : महिला आरक्षण पर फिर सदन में शक्ति परीक्षण की तैयारी,361 वोट जुटाने का सरकार को भरोसा

**नई दिल्ली,12 नवम्बर 2026।** सरकार महिला आरक्षण लागू करने से जुड़े संविधान संशोधन विधेयक को पारित कराने के लिए संसद का 'विशेष सत्र' बुलाने की योजना बना रही है। सूत्रों ने विश्वास व्यक्त किया है कि सरकार को इस विधेयक पर 15 से 18 वोटों के अंतर से जीत मिलेगी। विधेयक को पारित कराने के लिए दो-तिहाई बहुमत यानी 361 वोटों की आवश्यकता होगी। वर्तमान में लोकसभा में कुल 543 सीटें हैं, जिनमें से तीन सीटें अभी रिक्त हैं। प्रस्तावित संशोधन का उद्देश्य लोकसभा की मौजूदा 543 सीटों को परिसीमन के जरिये अधिकतम 850 तक बढ़ाना है। यह कदम संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण लागू करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह पहल ऐसे समय में हो रही है जब 17 अप्रैल को बजट सत्र के दौरान एक समान संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में आवश्यक संख्या हासिल करने में विफल रहा था। सरकार को विश्वास है कि उसके पास विधेयक पारित कराने के लिए पर्याप्त संख्या बल है। हालांकि, सरकार ने प्रस्तावित विशेष सत्र की तारीखों या उसकी अवधि का अभी खुलासा नहीं किया है।



### सत्र बुलाने की प्रक्रिया

संसद का मानसून सत्र 13 अगस्त को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया था। हालांकि, इसका अभी तक औपचारिक सत्रावसान नहीं हुआ है। यह सत्र अब 91 दिनों से बिना सत्रावसान के जारी है। इसने 2008 में बने 87 दिनों के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। मौजूदा सत्र के भीतर विस्तारित बैठक के लिए कम से कम दो दिन का नोटिस देना आवश्यक होता है। वहीं, एक नया सत्र बुलाने के लिए कम से कम 14 दिन का नोटिस देना अनिवार्य है। सरकार के मानसून सत्र को सत्रावसान न करने के निर्णय से विशेष बैठक की अटकलें तेज हो गई थीं। सरकार 2029 के संसदीय चुनावों से पहले महिला आरक्षण कानून को लागू करना चाहती है।

## यूपी में चंद्रशेखर-ओवैसी की पार्टियों में गठबंधन...सभी 403 सीटों पर लड़ेंगे,चंद्रशेखर सीएम फेस,प्रदेश में 40 प्रतिशत दलित-मुस्लिम वोट

**लखनऊ,12 नवम्बर 2026।** यूपी विधानसभा चुनाव से पहले AIMIM प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने गठबंधन का ऐलान किया है। इसका नाम सामाजिक परिवर्तन मोर्चा रखा गया है। गठबंधन यूपी की सभी 403 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगा। गुरुवार को लखनऊ में संयुक्त प्रेसवार्ता में ओवैसी ने कहा कि चंद्रशेखर यूपी में सीएम का चेहरा होंगे। भाजपा को रोकने के लिए हमारा मोर्चा मजबूत विकल्प बनेगा। सांसद चंद्रशेखर ने कहा कि यह तीसरा मोर्चा नहीं, बल्कि पहला मजबूत मोर्चा होगा। बड़े गठबंधन में शामिल होने की कोशिश की, लेकिन हमें कमजोर समझा गया। यूपी में मुस्लिम आबादी 19% और दलित आबादी 21% है। गठबंधन की नजर इसी 40% आबादी के वोटों पर है। इस गठबंधन का सीधा असर सपा और बसपा के वोट बैंक पर पड़ सकता है।

### आरएलडी नेता बोले- एनडीए की सफलता पर कोई असर नहीं

आरएलडी नेता केसी त्यागी ने ओवैसी-चंद्रशेखर गठबंधन पर कहा कि इससे एनडीए की सफलता या उसके एजेंडे पर कोई असर नहीं पड़ेगा। हालांकि, इससे चुनाव प्रचार में उत्साह और आक्रामकता बढ़ेगी। कांग्रेस लीडर आसिम वकार ने कहा- 'ओवैसी चिल्ला-चिल्लाकर अखिलेश और राहुल गांधी से कहते थे कि किसी मुसलमान को सीएम का चेहरा बनाओ, अब्दुल दरी नहीं बिछाएगा। लेकिन अब खुद गठबंधन में चंद्रशेखर को सीएम का चेहरा बना दिया।



## संपादकीय

# योग्यता को मिले पहली प्राथमिकता

हाल में बिहार सरकार ने शिक्षकों की भर्ती में डोमिसाइल को लेकर एक ऐसा नीतिगत फैसला लिया,जो चिंता पैदा करता हैं। 32 हजार शिक्षकों की भर्ती के लिए जारी विज्ञापन में रखी गई यह शर्त सवालों में है कि दूसरे राज्य की वे महिलाएं बिहार के डोमिसाइल (मूल निवासी होने का) और आरक्षण का लाभ नहीं ले सकेंगी,जिनकी शादी बिहार में हुई है। केवल उन्हीं महिलाओं को इसका लाभ मिल सकेगा, जिनके माता-पिता के पास बिहार का पता है। पति के बिहार में रहने का प्रमाण-पत्र मान्य नहीं होगा। आखिर जो महिला बिहार की बहू बन चुकी है और जिसका पति बिहार निवासी हो,उसे शिक्षक बनने से वंचित क्यों किया जाना चाहिए?पिछले कुछ वर्षों में बिहार में लाखों शिक्षकों की भर्ती हुई है,पर ऐसी कोई शर्त नहीं थी,फिर अब इसकी जरूरत क्यों पड़ गई? हम बेटियों को आगे बढ़ाना चाहते हैं या ऐसी शर्तें लगाकर उनके रास्ते में बाधाएं खड़ी करना चाहते हैं? जब केंद्र और राज्य सरकारें बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए तरह-तरह की योजनाएं लागू कर रही हैं और उनका लाभ पूरे समाज को मिल रहा है, तब ऐसी शर्त उचित नहीं लगती। नौकरियों के मामले में अंततः योग्यता महत्वपूर्ण होनी चाहिए, न कि केवल डोमिसाइल या किसी वर्ग विशेष से संबंधित होना। हमारे संविधान निर्माताओं ने देश की एकता और अखंडता के लिए ऐसे दूरदर्शी प्रविधान किए,जिनकी वजह से महाद्वीप जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश को एक सूत्र में बांधे रखना संभव हुआ। इसी कारण ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल की यह भविष्यवाणी गलत साबित हुई कि भारत 50 वर्षों में टूट जाएगा। भारत को पूरी दुनिया में लोकतंत्र के एक माडल के रूप में देखा जाता है और इसकी सबसे बड़ी वजह यहां की विविधता है। भाषा, बोली, पंथ, संस्कृति, रीति-रिवाज और जीवनशैली की जितनी विविधता भारत में है, वह बहुत कम देशों में देखने को मिलती है। देश की व्यवस्थाओं में भी इस विविधता के बीच एकता को मजबूत करने का प्रयास दिखाई देता है।

आइएएस,आइपीएस और भारतीय वन सेवा जैसी अखिल भारतीय सेवाएं इसका उदाहरण हैं। केंद्रीय सेवाओं में भी अधिकारियों की नियुक्ति देशभर में होती है। राजनीतिक व्यवस्था में भी यह परंपरा देखने को मिलती है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का जन्म पंजाब में हुआ और उन्होंने दिल्ली में अध्यापन किया,जबकि वे असम से राज्यसभा के लिए चुने गए।

# लोक आस्था का महा पर्व-छठ व्रत

**छठ मईया की महिमा,**
**जाने सकल जहान।**
**लाल पावे जे पूजे,**
**सदा करी कल्याण।।**

सृष्टी की देवी प्रकृति नें खुद को 6 बागों में बांट रखा है। इनके छठे अंश को मातृदेवी के रुप में पूजा जाता है। ये ब्रम्हा की मानस पुत्री हैं। छठ व्रत यानी इनकी पूजा कार्तिक मास में आमवस्या के दीपावली के छठे दिन मनाया जाता है इसलिए इसका नाम छठ पर्व पड़ गया। छठ व्रत भगवान सूर्यदेव को समर्पित एक हिंदुओं का एक विशेष पर्व है। भगवान सूर्यदेव के शक्तियों के मुख्य स्त्रोत उनकी पत्नी उषा और प्रत्यूषा है। यह पर्व उतर भारत के कई हिस्सों में खासकर यू.पी. झारखंड और बिहार में तो महापर्व के रुप में मानाया जाता है। शुद्धता,स्वच्छता और पवित्रता के साथ मनाया जाने वाला यह पर्व आदिकाल से मनाया जा रहा है। छठ व्रत में छठी माता की पूजा होती है और उनसे संतान व परिवार की रक्षा का वर मांगा जाता है। ऐसी मान्यता है कि जो भी सच्चे मन से छठ मैया का व्रत करता है। उसे संतान सुख के साथ-साथ मनोवांछित फल जरुर प्राप्त होता है। प्रायः हिदुओं द्वारा मनाये जाने वाले इस पर्व के इस्लाम और अन्य धर्मावलम्बी भी मनाते देखे गये हैं। यह पर्व हर वर्ष चैत एवं कार्तिक महिने में मनाया जाता है जिसे क्रमशः चैती छठ एवं कार्तिकी छठ कहते हैं। कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष में दीवाली के चौथे दिन से



लाल बिहारी लाल
नई दिल्ली

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

शुरु होकर सातवें दिन तक कुल 4 दिनों तक मानाया जाता है। इसमें पहले दिन यानी चतुर्थी को घरबार साफ सुथरा करके स्नान करने के बाद खाना में चावल तथा चने दाल तथा लौकी का सादा सब्जी बनाया जाता है फिर खाया जाता है जिसे नहा खाये कहते है। अगले दिन संध्या में पंचमी के दिन खरना यानी के गुड़ में चावल का खीर बनाया जाता है। उपले और आम के लकड़ी से मिट्टी के चूल्हें पर फिर सादे रोटी और केला के साथ छठ माई को याद करते हुए अग्रासन निकालने के बाद धूप हुमाद के साथ पूजा के बाद पहले व्रती खाती है फिर घर के अन्य सदस्य खाते हैं। इसी के साथ मां का आगमन हो जाता है। तत्पश्चात षष्टी के दिन घर में पवित्रता एवं शुद्धता के साथ उत्तम पकवान बनाये जाते हैं। संध्या के समय पकवानों को बड़े-बडे बांस के डालों तथा टोकरियों में भरकर नदी,तालाब,सरोवर आदि के किनारे ले जाया जाता है।जिसे छठ घाट कहा जाता है। फिर व्रत करने वाले भक्त उन डालों को उठाकर डूबते सूर्य (अस्ताचल) के समय सूरज की अंतिम किरण प्रत्यूषा को अर्घ्य देते हैं। ताकि जाते हुए माता सभी दुख दर्द लेती जाये और फिर सूर्यास्त के पश्चात लोग अपने-अपने घर आ जाते हैं। छठ व्रत के दौरान रात भर जागरण किया जाता है और सप्तमी के दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में पुनः संध्या काल की तरह डालों में पकवान, नारियल,केला,मिठाई भर कर नदी तट पर लोग जमा होते हैं। व्रत करने वाले सभी व्रतधारी सुबह के समय उगते सूर्य (उदय़मान) की किरणें उषा को आर्घ्य देते हैं ताकि जीवन में नई उर्जा का पुनः



संचार हो। इसमें अंकुरित चना हाथ में लेकर षष्ठीव्रत की कथा कही और सुनी जाती है। कथा के बाद छठ घाट पर प्रसाद वितरण किया जाता है और फिर सभी अपने-अपने घर लौट आते हैं। तथा व्रत करने वाले इस दिन पारण करते हैं। यह क्रम खरना के दिन से व्रती लगातार 36 घंटे निर्जल एवं निराहार रहते हुए व्रत करती है। इसलिए इसे कठिनतम व्रत भी कहा गया है।

कार्तिक मास में षष्ठी तिथि को मनाए जाने वाले छठ व्रत की शुरुआत रामायण काल से हुई थी। लोक मान्यताओं के अनुसार इस व्रत को त्रेतायुग में माता सीता ने तथा द्वापर युग में पांडु की पत्नी कुन्ती ने की थी जिससे कर्ण के रुप में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। पांडव का वैभव एवं राजपाट छिन जाने पर भगवान कृष्ण के सलाह पर पांडव की पत्नी द्रौपदी ने भी इस व्रत को किया था जिससे पांडवो का खोया हुआ वैभव एवं राजपाट पुनः मिल गया था।हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भगवान सूर्य एक मात्र प्रत्यक्ष देवता हैं। वास्तव में इनकी रोशनी से ही प्रकृति में जीवन चक्र चलता है। इनकी किरणों से धरती में फल, फूल, अनाज उत्पन्न होता है। छठ व्रत भी इन्हीं भगवान सूर्य को समर्पित है। इस महापर्व में सूर्य नारायण के साथ देवी षष्ठी की पूजा भी होती है। छठ पूजन कथानुसार छठ देवी भगवान सूर्यदेव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए भक्तगण भगवान सूर्य की आराधना तथा उनका धन्यवाद करते हुए मां गंगा-यमुना या किसी अन्य नदी या जल स्त्रोत के किनारे इस पूजा को मनाते हैं। इस व्रत को करने से संतान की प्राप्ति होती है तथा पूजा करने वाले हर प्राणियों की मनोकामनायें पूर्ण होती है। यह पर्व कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाई जाती है। और यह भगवान सूर्य को समर्पित है। बिहार और पूर्वांचल के निवासी आज जहां भी हैं वे सूर्य भगवान को अर्ग देने की परंपरा को आज भी कायम रखे हुए हैं। यही कारण है कि आज यह पर्व बिहार,झारखंड और पूर्वांचल की सीमा से निकलकर देश विदेश में मनाया जाने लगा है। चार दिनों तक चलने वाला यह पर्व बड़ा ही कठिन है। इसमें शरीर और मन को पूरी तरह साधना पड़ता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान राम सूर्यवंशी थे और उनके कुल देवतासूर्यदेव थे। इसलिए भगवान राम जब लंका से रावण वध करके अयोध्या वापस लौटे तो अपने कुलदेवता का आशीर्वाद पाने के लिए उन्होंने देवी सीता के साथ षष्ठी तिथि का व्रत रखा और सरयू नदी में डूबते सूर्य को फल, मिष्ठान एवं अन्य वस्तुओं से अर्घ्य प्रदान किया। सप्तमी तिथि को भगवान राम ने उगते सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य देव का आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद राजकाज संभालना शुरु किया। इसके बाद से आम जन भी सूर्य षष्ठी का पर्व मनाने लगे ।

एक अन्य कथा के अनुसार एक राजा प्रियव्रत थे उनकी पत्नी थी मालिनी । राजा रानी निःसंतान होने से बहुत दुखी थे। उन्होंने महर्षि कश्यप से पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाया। यज्ञ के प्रभाव से मालिनी गर्भवती हुई परंतु नौ महीने बाद जब उन्होंने बालक को जन्म दिया तो वह संतान मृत पैदा हुआ। प्रियव्रत इस से अत्यंत दुःखी हुए और आत्म हत्या करने हेतु तत्पर हुए। प्रियव्रत जैसे ही आत्महत्या करने वाले थे उसी समय एक देवी वहां प्रकट हुई। देवी ने कहा प्रियव्रत मैं षष्टी देवी हूं। मेरी पूजा आराधना से पुत्र की प्राप्ति होती है, मैं सभी प्रकार की मनोकामना पूर्ण करने वाली हूं। अतः तुम मेरी पूजा करो तुम्हे पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। राजा ने देवी की आज्ञा मान कर कार्तिक शुक्ल षष्टी तिथि को देवी षष्टी की पूजा की जिससे उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई । और उसी दिन से छठ व्रतका अनुष्ठान चला आ रहा है। इस महापर्व में देवी षष्ठी माता एवं भगवान सूर्य को प्रसन्न करने के लिए स्त्री और पुरूष दोनों ही व्रत रखते हैं। इस पर्व के विषय में मान्यता है कि षष्ठी माता और सूर्य देव से इस दिन जोभी मांगा जाता है वह मनोकामना पूरी होती है। इस अवसर पर मनोकामना पूरी होने पर बहुत से लोग सूर्य देव को दंडवत प्रणाम करते हैं। सूर्य को दंडवत प्रणाम करने का व्रत बहुत ही कठिन होता है, लोग अपने घर में कुल देवी या देवता को प्रणाम कर नदी तट तक दंड देते हुए जाते हैं। दंड प्रक्रिया के अनुसार पहले सीधे खडे होकर सूर्य देव को प्रणाम किया जाता है फिर पेट की ओर से ज़मीन पर लेटकर दाहिने हाथ से ज़मीन पर एक रेखा खींची जाती है. यही प्रक्रिया नदी तट (छठ घाट) तक पहुंचने तक बार बार दुहरायी जाती है ।भगवान सूर्यदेव के प्रतिभक्तों के अटलआस्था का अनूठा पर्व छठ हिन्दू पंचांग के अनुसार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के चतुर्थी से सप्तमी तिथि तक मनाया जाता है।

# महापर्व छठ पूजा हमारी आस्था





कमलेश झा
नगरपारा
भागलपुर
बिहार

जब विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता की स्त्रियां अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ सज-धज कर अपने आँचल में फल और पकवान ले कर निकलती हैं तो लगता है जैसे संस्कृति स्वयं समय को चुनौती देती हुई कह रही हो, देखो! तुम्हारे असँख्य झंझावातों को सहन करने के बाद भी हमारा वैभव कम नहीं हुआ है, हम सनातन हैं,हम भारत हैं हम आर्यावर्त के धरोहर हैं। हम तबसे हैं जबसे तुम हो,और जबतक तुम रहोगे तबतक हमारा अस्तित्व भी रहेगा। जब घुटने भर जल में खड़ी व्रती की सिपुलि में बालक सूर्य की किरणें उतरती हैं तो लगता है जैसे स्वयं सूर्य भगवान बालक बन कर उसकी गोद में खेलने उतरे हों। स्त्री का सबसे भव्य,सबसे वैभवशाली स्वरूप मातृत्व का है। इस धरा को भारत माता कहने वाले बुजुर्ग के मन में स्त्री का यही स्वरूप रहा होता है। कभी ध्यान से देखिएगा छठ के दिन जल में खड़े हो कर सूर्य देव को अर्घ दे रही किसी स्त्री को,देखकर आपके मन में मोह नहीं श्रद्धा उपजेगी।

छठ वह प्राचीन पर्व है जिसमें राजा और रंक एक घाट पर शीश नवाते हैं, एक देवता को अर्घ देते हैं,और एक बराबर आशीर्वाद पाते हैं। धन और पद का लोभ मनुष्य को मनुष्य से दूर करता है, पर धर्म उन्हें साथ जोड़ता है। अपने धर्म और परंपरा के साथ होने का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि आप अपने समस्त पुरुखों के आशीर्वाद की छाया में होते हैं। छठ के दिन नाक से माथे तक सिंदूर लगा कर घाट पर बैठी स्त्री अपनी हजारों पीढ़ी की परंपरा की वाहक हीं नहीं होती है, बल्कि वह उन्ही का स्वरूप होती है। उसके आंचल में केवल फल नहीं होते,समूची प्रकृति समाई होती है। वह एक सामान्य स्त्री सी नहीं,अन्नपूर्णा सी देवी दिखाई देती है। ध्यान से देखिये! आपको उनमें कौशल्या दिखेंगी,उनमें सीता दिखेगी,उनमें अनुसुइया दिखेगी, सावित्री दिखेगी..उनमें पद्मावती दिखेगी, उनमें लक्ष्मीबाई दिखेगी, उनमें भारत माता को छवि दिखेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि उनके आँचल में बंध कर ही यह सभ्यता अगले हजारों वर्षों का सफर करने में समर्थ होगी । छठ डूबते सूर्य की आराधना का पर्व है। डूबता सूर्य इतिहास होता है,और कोई भी सभ्यता तभी दीर्घजीवी होती है जब वह अपने इतिहास को पूजे। अपने इतिहास के समस्त योद्धाओं को पूजे और इतिहास में अपने विरुद्ध हुए सारे सदयंत्रों याद रखे और उस गलती को न दुहराए।

छठ उगते सूर्य की आराधना का पर्व है। उगता सूर्य भविष्य होता है, और किसी भी सभ्यता के यशश्वी होने के लिए आवश्यक है कि वह अपने भविष्य को पूजा जैसी श्रद्धा और निष्ठा से सँवारे... हमारी आज की पीढ़ी को सदैव इसका स्मरण रहे अगली जिम्मेदारी उनकी है ...यही छठ व्रत का मूल भाव है।

मैं खुश होता हूँ घाट जाती स्त्रियों को देख कर, मैं खुश होता हूँ उनके लिए राह बुहारते पुरुषों को देख कर, मैं खुश होता हूँ उत्साह से भरे बच्चों को देख कर... सच पूछिए तो यह मेरी खुशी नहीं, मेरी मिट्टी, मेरे देश, मेरी सभ्यता की खुशी है। मेरे देश की माताओं! कल और परसों जब आदित्य देव आपकी बंश सूप में उतरें,तो उनसे कहिएगा कि इस देश,इस संस्कृति और समाज पर अपनी कृपा बनाये रखें, ताकि हजारों वर्ष बाद भी हमारी पुत्रवधुएँ यूँ ही सज-धज कर गंगा के जल में खड़ी हों और कहें...उग हो सुरुज देव.....

**जय आदित्य देव जय आस्था**
**जय सनातन जय सनातनी**

# कैंसर दवा सस्ती करने में बरसों वाहवाही बटोरने में पल भर

**कैंसर दवाओं के दाम घटे हैं,बीते जुल्मों के निशान नहीं**
**कैंसर मरीजों के आंसू सूखे नहीं, सरकारी जश्न शुरू हो गया**

कैंसर के मरीज के लिए दवा की कीमत केवल पैसों का सवाल नहीं,जिंदगी बचाने की उम्मीद होती है। किसी अपने को बचाने के लिए जूझ रहे परिवार के लिए 40 हजार रुपये की दवा मजबूरी बन जाती है और 40 रुपये की बचत भी मायने रखती है। ऐसे में वर्षों से आसमान छू रही कैंसर की दवाओं की कीमतों में 50 से 96 प्रतिशत तक की गिरावट बड़ी राहत है। लेकिन सवाल है कि जब सरकार के पास कीमतों पर लगाम लगाने का अधिकार पहले से था, तो मरीजों को इस राहत के लिए इतने साल क्यों इंतजार करना पड़ा? क्या सरकार को आम आदमी की पीड़ा तब तक दिखाई नहीं देती, जब तक अदालत को हस्तक्षेप कर सवाल उठाने न पड़ें और व्यवस्था की नींद न टूटे?



रितेश कुमार जैन
बड़वानी,मध्यप्रदेश

राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने 137 गैर-अनुसूचित कैंसर दवाओं पर ट्रेड मार्जिन 30 प्रतिशत तक सीमित किया है। 9 नवंबर 2026 से लागू इस फैसले से कई दवाओं की कीमतें 50 से 96 प्रतिशत तक घटी हैं। कभी 40-45 हजार रुपये में बिकने वाली कुछ दवाएं अब दो-तीन हजार रुपये में मिल रही हैं। सरकार/मंत्रालय के अनुसार, इससे मरीजों को सालाना करीब 3,540.38 करोड़ रुपये की बचत का अनुमान है। 85 कंपनियों ने 121 दवाओं की कीमतें संशोधित की हैं और 1,364 फॉर्मूलेशन प्रभावित हुए हैं। फैसला राहत देने वाला है, लेकिन इसे सरकारी उपलब्धि के रूप में प्रचारित करना उन मरीजों और परिवारों की पीड़ा भुलाना होगा,जिन्होंने महंगी दवाओं के लिए जमा-पूंजी, संपत्ति और अपनों तक को खो दिया।

आखिर कैंसर की दवाएं इतनी महंगी क्यों थीं? दवा की वास्तविक कीमत और मरीज तक पहुंचते-पहुंचते उसकी खुदरा कीमत में इतना बड़ा अंतर कैसे पैदा हो गया कि एक इंजेक्शन या कैप्सूल के लिए कई गुना रकम वसूली जाने लगी? ऊंचे ट्रेड मार्जिन ने दवा कंपनियों, वितरकों, थोक विक्रेताओं और खुदरा कारोबारियों के मुनाफे बढ़ाए, लेकिन इसकी कीमत मरीजों ने चुकाई। कैंसर से जूझता मरीज न दवा छोड़ सकता था,न कीमत पर सवाल उठा सकता था। बीमारी से टूटे परिवारों पर महंगे इलाज का आर्थिक बोझ भी लदता गया। शोध और विकास पर खर्च तथा कारोबारी मुनाफे के अपने तर्क हैं, लेकिन जीवनरक्षक दवाओं के कारोबार में मुनाफे की इतनी खुली छूट आखिर कैसे उचित ठहराई जा सकती है?




इस महंगाई की सबसे बड़ी कीमत उन परिवारों ने चुकाई, जिन्होंने अपनों को बचाने के लिए जीवनभर की कमाई लगा दी। किसी ने बेटी की शादी की रकम खर्च की, किसी मां ने गहने गिरवी रखे, तो किसी पिता ने घर-जमीन बेच दी। इसका कोई सरकारी हिसाब नहीं है। मध्यवर्ग की बचत खत्म हुई और गरीबों के लिए इलाज शुरू करना भी मुश्किल हो गया। अगली खुराक के पैसे न होने से इलाज अधूरा छूटा,बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हुई और परिवार कर्ज में डूबे। गांवों और छोटे शहरों में अनेक लोगों ने आर्थिक मजबूरी में इलाज की उम्मीद छोड़ दी। महंगी दवाओं ने कैंसर की मार और बढ़ा दी। यह केवल स्वास्थ्य व्यवस्था की विफलता नहीं,गंभीर सामाजिक त्रासदी थी।

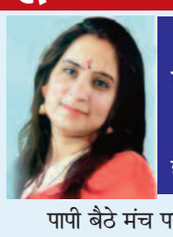
दवाओं की कीमतें नियंत्रित करने के अधिकार सरकार और एनपीपीए के पास पहले से थे,फिर भी मरीज वर्षों तक महंगी दवाओं का बोझ उठाते रहे। ड्रग्स प्राइस कंट्रोल ऑर्डर के तहत सरकार असाधारण परिस्थितियों में कीमतें घटा सकती थी। वर्ष 2019 में 42 गैर-अनुसूचित कैंसर दवाओं पर भी ट्रेड मार्जिन 30 प्रतिशत तक सीमित किया गया था। इससे 526 ब्रांड प्रभावित हुए और सरकार ने सालाना 984 करोड़ रुपये की बचत का अनुमान जताया था। फिर बाकी दवाओं को नियंत्रण में लाने में इतनी देर क्यों हुई? क्या सरकारी बैठकों और रिपोर्टों के बीच मरीजों की पीड़ा अनसुनी होती रही? नियामक संस्थाओं का दायित्व केवल आदेश जारी करना नहीं,बाजार की मनमानी रोकना भी है।

सरकार की देरी पर सर्वोच्च न्यायालय ने भी सवाल उठाए। अक्टूबर 2026 की सुनवाई में अदालत ने दवाओं के खरीद मूल्य और मरीजों से वसूली जाने वाली कीमत के भारी अंतर पर चिंता जताई। 27 अक्टूबर को न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने पूछा कि वितरक स्तर पर करीब 11 हजार रुपये के कैंसर इंजेक्शन के लिए अस्पताल 1.30 लाख रुपये तक क्यों वसूल रहे हैं? अदालत ने इसे मरीजों के साथ लूट जैसा बताते हुए केंद्र से पूछा कि ट्रेड मार्जिन नियंत्रित करने में इतनी देर क्यों हुई। यह सवाल पूरी व्यवस्था पर है, जहां मरीजों की मजबूरी मुनाफे का जरिया बनती रही और नियामक तंत्र समय पर कदम नहीं उठा सका।

कीमतें घटाना काफी नहीं,सरकार को मरीजों तक वास्तविक राहत पहुंचानी होगी। 3,540 करोड़ रुपये की अनुमानित सालाना बचत भविष्य की राहत है,बीते वर्षों में वसूली गई अतिरिक्त रकम की वापसी नहीं। जिन परिवारों ने कर्ज लिया,संपत्ति बेची और बचत गंवाई,उनके नुकसान की भरपाई कौन करेगा? पैसों के अभाव में जिन मरीजों का इलाज अधूरा छूटा,उनकी जवाबदेही कौन लेगा? सरकार को सुनिश्चित करना होगा कि कंपनियां पुरानी कीमतों पर दवाएं न बेचें, अस्पताल संशोधित एमआरपी से अधिक न वसूलें और वितरक कृत्रिम कमी पैदा न करें। नियमित निगरानी,पारदर्शी मूल्य सूची,पर्याप्त उपलब्धता और उल्लंघन पर कठोर कार्रवाई ही इस फैसले की असली कसौटी होगी।

कैंसर की दवाओं का सस्ता होना परिवारों की बुझती उम्मीद में नई रोशनी जैसा है। लेकिन इसके साथ वर्षों की सरकारी निष्क्रियता का हिसाब भी मांगा जाना चाहिए। समय रहते यह फैसला हुआ होता,तो कितने परिवारों की जमा-पूंजी बचती,कितने मरीजों का इलाज अधूरा न छूटता और कितने घर आर्थिक तबाही से बच जाते। कंपनियों और बिचौलियों ने मुनाफा कमाया,लेकिन मरीजों की बचत, संपत्ति और अधूरे इलाज की भरपाई कौन करेगा? सरकार को अपनी नियामक विफलता की जवाबदेही तय करनी होगी और ऐसी स्थिति दोबारा रोकनी होगी। कैंसर के मरीज सरकारी प्रचार का माध्यम नहीं,व्यवस्था से जवाबदेही के हकदार हैं। जीवनरक्षक दवाओं पर मुनाफे की मनमानी नहीं,जनहित का पहरा होना चाहिए।

## झूठे पहरेदार



डॉ. प्रियंका सौरभ
हिसार, हरियाणा

पापी बैठे मंच पर,
संत हुए लाचार।
सच्चाई को ढूँढ़ता,
भटक रहा संसार॥
दौलत के बाजार में,
बिकता हर किरदार।
कुछ सिक्कों में बिके,
रिश्ते और विचार॥
जिनको हमने मानकर,
सौंपा था अधिकार।
वही लूटने आ गए,
अपना ही घर-बार॥
मीठी वाणी बोलकर,
करते दिल पर वार।
ऐसे चेहरों ही करें,
रिश्तों का व्यापार॥
दर्पण से डरने लगे,झूठे पहरेदार।
अपने चेहरे देखना,
उनको लगे बेकार॥
ज्ञान बाँटते फिर रहे,
जिनके मन अंधकार।
खुद के भीतर झाँकने,
से करते इंकार॥
सत्ता के गलियार में,
बिकता न्याय विचार।
निर्धन की आवाज़ का,
कौन बनेगा यार॥
पैर छुए अपराध के,
संत बने गद्दार।
देख तमाशा जग करे,
कैसा है दरबार॥
कल तक जो थे आम से,
आज बने सरकार।
भूल गए संघर्ष को,
भूल गए उपकार॥

## हिंदी कवितायें

### मनुष्य का शरीर है चिता



प्रोफेसर शाम लाल कौशल
रोहतक,हरियाणा

मनुष्य का शरीर है एक चिता
आदमी ईर्ष्या होने पर जलता है
जलता है जब उसे अहंकार हो
क्रोध में अक्सर हम जलते हैं
किसी की तरक्की से जलन होती है
लालच की आग भी हम मे सुलगती है
लोभ की ज्वाला भी जलती रहती है
किसी को हृष्टपुष्ट देखकर जलन होती है
जलन पैदा करता है किसी का सुखी होना
मृत व्यक्ति को चिता पर जलाया जाता है
लोगों को इस बात का पता नहीं होता कि
यह शख्स तो सारी उम्र जलता ही रहा है।।
जल जल कर भी जीना कोई जीना है!

### छठ महापर्व - आस्था का अनुपम उजास





संजय एम तराणेकर
इन्दौर
मध्यप्रदेश

4 दिनी पावन पर्व,
आस्था का अनुपम उपहार,
छठी मैया के चरणों में,
झुकता है सारा संसार।
नदी किनारे सजे घाट हैं,
दीपों की सुंदर कतार,
सूप,फल,ठेकुआ लें,
सजता श्रद्धा का दरबार।

निर्जल व्रत कठिन साधना,
मन में अटूट विश्वास,
डूबते सूरज को अर्घ्य दें,
जागे नई उम्मीद आस।
उगते सूरज की किरण,
जीवन में खुशियाँ भरती,
छठी मैया की कृपा दृष्टि,
हरेक संकट को हरती।

ना कोई ऊँचा,ना नीचा,
सभी का समान सम्मान,
लोक संस्कृति की झाँकी
छठ पर्व की पहचान।
राम-सिया पावन गाथा,
कर्ण की सूर्य उपासना,
श्रद्धा-संयम-समर्पण से,
सीखें जीवन को साधना।

व्रत में संतान की खुशियाँ,
परिवार मंगल संसार,
हर चौक सुख-शांति बरसे,
महके प्रेम घर-परिवार।
जय-जय छठी मैया की गूँजे,
गूँजे सूर्यदेव का गान,
श्रद्धा के इस महापर्व को,
शत-शत हमारा प्रणाम।

**सूचना**
समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
सम्पादक

CMYK



# कबरा कान हाथी का फिर खूनी तांडव

- एक और महिला की मौत, दूसरी का पैर टूटा
- छह महीने में 18 लोगों की जान ले चुका हैं हाथी
- सूरजपुर के बाद अब सरगुजा के उदयपुर क्षेत्र में आतंक



## अब ट्रेंकुलाइज कर लगाया जाएगा सैटेलाइट रेडियो कॉलर



# 18 जिंदगियां निगल चुका कबरा कान,फिर मचाया खूनी तांडव!

## सूरजपुर से उदयपुर तक मौत का सफर! कबरा कान ने फिर ली महिला की जान...

## 18 जिंदगियां निगल चुका कबरा कान,अब ट्रैंकुलाइज कर लगेगा रेडियो कॉलर

**छह महीने से मौत बांट रहा कबरा कान, आखिर कब थमेगा हाथी का आतंक?**

**वन अमला बेबस, कबरा कान का आतंक बरकरार,अब रेडियो कॉलर से रोकेंगे मौतों का सिलसिला!**

**सूरजपुर के बाद सरगुजा के उदयपुर में दहशत, ड्रोन से निगरानी और स्कूलों में छुट्टी के बावजूद ग्रामीणों में खौफ**

**छह महीने से सूरजपुर,सरगुजा और बलरामपुर के जंगलों में मचा रहा उत्पात,11 नवंबर की रात फिर महिला को कुचलकर मार डाला,उदयपुर के जंगल में पहुंचते ही पांच स्कूलों में छुट्टी,ड्रोन से निगरानी के बीच वन विभाग ने शुरू की घेराबंदी**

-ओंकार पाण्डेय-

**अंबिकापुर/सूरजपुर,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।**

सरगुजा संभाग के जंगलों में पिछले छह महीने से मौत का पर्याय बना कबरा कान हाथी अब वन विभाग के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गया है,एक के बाद एक गांवों में घुसकर ग्रामीणों को कुचलने और लगातार जनहानि की घटनाओं के बावजूद इस हाथी का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है, सूरजपुर जिले से लेकर सरगुजा और बलरामपुर के सीमावर्ती वन क्षेत्रों तक विचरण कर रहे इस हाथी ने एक बार फिर इंसानी जिंदगी को अपना निशाना बनाया है,11 नवंबर की रात सूरजपुर जिले के उमेश्वरपुर क्षेत्र के श्यामनगर में 45 वर्षीय महिला दिलासो को कुचलकर मार डालने के बाद हाथी सरगुजा जिले के उदयपुर वन परिक्षेत्र में पहुंच गया,इससे पहले उदयपुर के झिरमिटी क्षेत्र में 70 वर्षीय महिला चेंगटी की मौत और खेत में धान काट रही वर्षा ठाकुर के पैर में गंभीर चोट पहुंचाने की घटना भी सामने आ चुकी है, लगातार मौतों और हमलों से प्रभावित गांवों में भय का माहौल है। हालात ऐसे हैं कि हाथी की मौजूदगी वाले जंगल के आसपास के पांच स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए छुट्टी घोषित करनी पड़ी, वन विभाग ड्रोन और अलग-अलग स्थानों पर तैनात टीमों के माध्यम से उसकी निगरानी कर रहा है,आखिरकार लगातार बढ़ते दबाव और जनहानि के बीच प्रधान मुख्य वन्यजीव वार्डन ने कबरा कान हाथी को ट्रैंकुलाइज कर उसके गले में सैटेलाइट रेडियो कॉलर लगाने की अनुमति दे दी है,अब सूरजपुर और बलरामपुर के वनमंडलाधिकारी की संयुक्त जिम्मेदारी में विशेषज्ञों की टीम इस अभियान को अंजाम देने की तैयारी में जुट गई है।

**छह महीने से मौत बांट रहा कबरा कान,हर नए हमले के साथ बढ़ रही दहशत**-कबरा कान हाथी की पहचान उसके कानों के विशिष्ट धब्बेदार स्वरूप के कारण हुई है,यह हाथी झुंड से अलग अकेले विचरण करता है और पिछले कई महीनों से सूरजपुर, प्रतापपुर,प्रेमनगर,रामानुजनगर,सरगुजा के उदयपुर तथा बलरामपुर के विभिन्न वन क्षेत्रों में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रहा है,इसकी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हाथी एक स्थान पर टिककर नहीं रहता,रातोंरात कई किलोमीटर का सफर तय कर दूसरे वन क्षेत्र में पहुंच जाता है, इसी वजह से वन विभाग के लिए इसकी गतिविधियों का अनुमान लगाना और प्रभावित गांवों को समय रहते सतर्क करना मुश्किल हो रहा है,दीपावली की रात भी कबरा कान ने दो अलग-अलग घटनाओं में ग्रामीणों की जान ले ली थी,सूरजपुर जिले के सोनपुर क्षेत्र में धान की फसल की रखवाली करने गए मोहनलाल कंवर और प्रतापपुर वन परिक्षेत्र के श्यामनगर निवासी कृष्णा राजवाड़े को हाथी ने कुचलकर मार डाला था,इसके बाद कंदई क्षेत्र में विष्णु राम भी हाथी के हमले का शिकार हो गए, लगातार तीन मौतों के बाद ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ा और वन विभाग से हाथी को पकड़कर सुरक्षित रेस्क्यू सेंटर में रखने की मांग तेज हुई, इसी बीच हाथी ने उमेश्वरपुर के श्यामनगर में 45 वर्षीय दिलासो को अपना शिकार बना लिया, रात करीब 11 बजे हाथी की मौजूदगी की जानकारी मिलने पर महिला अपने पति और बेटे को सतर्क करने के लिए घर से बाहर निकली थी,इसी दौरान हाथी ने अचानक उस पर हमला कर दिया और कुचलकर उसकी जान ले ली। परिवार के लोगों को संभलने का मौका तक नहीं मिला,इस घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया कि कबरा कान की मौजूदगी वाले क्षेत्रों में रात के समय ग्रामीणों के लिए खतरा कितना गंभीर हो चुका है।

**हाथी की मौजूदगी से स्कूलों में छुट्टी, बच्चों की सुरक्षा बनी प्राथमिकता**-कबरा कान हाथी के उदयपुर क्षेत्र में पहुंचने के बाद प्रशासन और वन विभाग की चिंता और बढ़ गई है,झिरमिटी जंगल के आसपास हाथी की मौजूदगी को देखते हुए शिक्षा विभाग ने एहतियातन पांच स्कूलों में छुट्टी घोषित की, इनमें डूमरडीह,धौंरपारा,ललमटिया पारा,स्वामी आत्मानंद विद्यालय और जरहाडीह स्कूल शामिल बताए गए हैं,प्रशासन का यह फैसला बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर लिया गया है,जंगल के आसपास रहने वाले बच्चे रोजाना स्कूल आने-जाने के लिए रास्तों का उपयोग करते हैं। यदि इसी दौरान हाथी गांव के नजदीक पहुंच जाए तो बड़ी दुर्घटना हो सकती है,खंड शिक्षा अधिकारी मृत्युंजय पांडेय के अनुसार हाथी की मौजूदगी वाले जंगल के आसपास के स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा के मद्देनजर छुट्टी दी गई है, हाथी की गतिविधियों और परिस्थितियों का आकलन करने के बाद ही स्कूलों को पुनः खोलने का निर्णय लिया जाएगा।

ड्रोन से निगरानी,पांच स्थानों पर वन अमला तैनात-हाथी की लगातार बदलती लोकेशन को देखते हुए वन विभाग ने निगरानी बढ़ा दी है,ड्रोन कैमरों के माध्यम से जंगल में हाथी की गतिविधियों का पता लगाया जा रहा है, इसके अलावा पांच अलग-अलग स्थानों से वन अमले की टीमें निगरानी में जुटी हैं,सरगुजा वनमंडल के अधिकारी भी मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा ले रहे हैं,आसपास के गांवों में ग्रामीणों को हाथी की मौजूदगी की जानकारी दी जा रही है। उन्हें जंगल की ओर नहीं जाने, हाथी के करीब पहुंचकर फोटो या वीडियो नहीं बनाने तथा उसे भगाने या घेरने का प्रयास नहीं करने की सलाह दी गई है,लेकिन यहां सवाल सिर्फ निगरानी का नहीं है,जब हाथी लगातार अपना क्षेत्र बदल रहा है और कई गांवों में प्रवेश कर रहा है,तब वन विभाग के पास ऐसा प्रभावी सूचना तंत्र होना चाहिए जो हाथी की लोकेशन मिलने के तत्काल बाद प्रभावित गांवों तक चेतावनी पहुंचा सके।

**आखिरकार मिली अनुमति, ट्रैंकुलाइज कर लगाया जाएगा सैटेलाइट रेडियो कॉलर**-लगातार हो रही जनहानि के बीच वन विभाग ने अब कबरा कान हाथी के वैज्ञानिक प्रबंधन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है,सरगुजा संभाग के वन्यजीव अधिकारियों ने हाथी की गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण और निगरानी के लिए उसे ट्रैंकुलाइज कर रेडियो कॉलर लगाने का प्रस्ताव राज्य मुख्यालय को भेजा था,इस संबंध में प्रधान मुख्य वन्यजीव वार्डन एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन कार्यालय ने अनुमति जारी कर दी है, आदेश के बाद अब हाथी को बेहोश कर उसके गले में सैटेलाइट रेडियो कॉलर लगाने की तैयारी शुरू की जा रही है,इस अभियान की संयुक्त जिम्मेदारी सूरजपुर और बलरामपुर के वनमंडलाधिकारियों को सौंपी गई है,दोनों जिलों के डीएफओ संयुक्त रूप से प्रभारी एवं नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे,अभियान के लिए विशेषज्ञों,प्रशिक्षित पशु चिकित्सकों,ट्रैकरों और आवश्यक वन्यजीव प्रबंधन संसाधनों की व्यवस्था की जाएगी,जरूरत पड़ने पर प्रशिक्षित कुमकी हाथियों की सहायता भी ली जा सकती है,यह कार्रवाई वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 11(1)(क) के तहत जारी अनुमति और निर्धारित वन्यजीव प्रबंधन प्रक्रिया के अनुरूप की जाएगी।

**क्या है सैटेलाइट रेडियो कॉलर और कैसे करेगा काम?**- सैटेलाइट रेडियो कॉलर एक विशेष ट्रैकिंग उपकरण है, जिसे हाथी के गले में मजबूत पट्टे के माध्यम से लगाया जाता है,यह उपकरण उपग्रह आधारित प्रणाली के जरिए हाथी की लोकेशन और उसकी गतिविधियों से संबंधित जानकारी वन विभाग तक पहुंचाता है,इससे विभाग को पता चल सकेगा कि हाथी किस दिशा में बढ़ रहा है,किस वन क्षेत्र में मौजूद है और किन गांवों के आसपास पहुंचने की आशंका है। पहले हाथी की मौजूदगी का पता लगाने के लिए वनकर्मियों को जंगल में उसके पैरों के निशान,टूटे पेड़, फसलों को हुए नुकसान और ग्रामीणों से मिली सूचनाओं पर निर्भर रहना पड़ता था,लेकिन रेडियो कॉलर लगने के बाद उसकी लोकेशन की जानकारी अधिक व्यवस्थित तरीके से प्राप्त की जा सकेगी,इसका सबसे बड़ा फायदा यह हो सकता है कि हाथी के संभावित रास्ते में आने वाले गांवों को पहले से अलर्ट किया जा सके। वन विभाग अपनी टीमों को पहले से तैनात कर सकेगा और जरूरत पड़ने पर ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की व्यवस्था भी कर सकेगा, हालांकि,रेडियो कॉलर हाथी को नियंत्रित करने वाला उपकरण नहीं है। यह उसकी गतिविधियों की जानकारी देने वाला माध्यम है,वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि प्राप्त लोकेशन के आधार पर वन विभाग कितनी तेजी से कार्रवाई करता है।

**रेडियो कॉलर लगाने के बाद हर 15 दिन में देनी होगी रिपोर्ट**- वन विभाग की कार्ययोजना में सिर्फ रेडियो कॉलर लगाना ही शामिल नहीं है, बल्कि उसके बाद हाथी की लगातार निगरानी भी महत्वपूर्ण हिस्सा है, अभियान के दौरान हाथी को न्यूनतम शारीरिक नुकसान पहुंचे और आसपास के ग्रामीणों की सुरक्षा बनी रहे, इसका विशेष ध्यान रखा जाएगा,ट्रैंकुलाइज करने के बाद हाथी के स्वास्थ्य की जांच की जाएगी,रेडियो कॉलर लगाने की प्रक्रिया पूरी होने और हाथी के स्वस्थ पाए जाने पर उसे उसके प्राकृतिक वन क्षेत्र में छोड़ा जाएगा,इसके बाद उसकी गतिविधियों की नियमित निगरानी होगी और प्रत्येक 15 दिन में शासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी,इस व्यवस्था से वन मुख्यालय को भी हाथी की गतिविधियों, उसके विचरण क्षेत्र और अभियान की प्रगति की जानकारी मिलती रहेगी।

**पहले भी लगाए जा चुके हैं रेडियो कॉलर,फिर भी चुनौतियां बरकरार**- सरगुजा संभाग में हाथियों की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए पहले भी रेडियो कॉलर का प्रयोग किया जा चुका है,लेकिन पूर्व में कुछ हाथियों के गले से कॉलर गिरने या उनके निकल जाने जैसी समस्याएं सामने आने की जानकारी भी मिलती रही है,ऐसे में कबरा कान के मामले में वन विभाग के सामने सिर्फ कॉलर लगाने की नहीं,बल्कि उसे प्रभावी तरीके से स्थापित करने और लंबे समय तक काम करने योग्य बनाए रखने की चुनौती भी होगी,इसके अलावा हाथी का व्यवहार, उसकी आक्रामकता और विचरण के दौरान मानव बस्तियों के नजदीक पहुंचने की प्रवृत्ति का अध्ययन भी जरूरी होगा,रेडियो कॉलर से मिलने वाले आंकड़ों के आधार पर ही भविष्य की रणनीति तैयार की जा सकेगी।

**क्या रेस्क्यू सेंटर भेजा जाएगा कबरा कान?**-वन विभाग के सामने यह भी सवाल है कि यदि रेडियो कॉलर लगाने और निगरानी बढ़ाने के बाद भी हाथी के हमले नहीं रुकते हैं तो आगे क्या किया जाएगा? विभागीय स्तर पर यह विकल्प भी चर्चा में है कि यदि हाथी का व्यवहार नियंत्रित नहीं होता और मानव जीवन के लिए खतरा बना रहता है तो उसे रेस्क्यू सेंटर में रखने की दिशा में आगे की अनुमति मांगी जा सकती है, हालांकि,इस तरह का निर्णय हाथी के व्यवहार,स्वास्थ्य,विशेषज्ञों की रिपोर्ट और वन्यजीव संरक्षण से संबंधित निर्धारित प्रक्रियाओं के आधार पर ही लिया जा सकेगा, किसी वन्यजीव को पकड़ना या उसके प्राकृतिक आवास से हटाना आसान कार्रवाई नहीं है,इसलिए वन विभाग को वैज्ञानिक आकलन के साथ ही मानव जीवन की सुरक्षा को भी सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी।

### उदयपुर में भी नहीं थमा तांडव, बुजुर्ग महिला की मौत और दूसरी महिला गंभीर घायल

सूरजपुर के उमेश्वरपुर में महिला की जान लेने के बाद कबरा कान हाथी लक्ष्मीपुर की ओर से सरगुजा जिले के उदयपुर वन परिक्षेत्र में प्रवेश कर गया, हाथी की गतिविधियां झिरमिटी और आसपास के गांवों के लिए चिंता का कारण बन गई, झिरमिटी निवासी 70 वर्षीय महिला चेंगटी अपने घर के पास बाड़ी में बैठी थी, उम्र अधिक होने के कारण वह ठीक से चल-फिर भी नहीं पाती थी, ऐसे में हाथी के अचानक पहुंचने पर उसे भागने का अवसर नहीं मिला, हाथी ने उसे कुचल दिया, जिससे उसकी मौत हो गई, इसी क्षेत्र में खेत में धान की कटाई कर रही 45 वर्षीय वर्षा ठाकुर पर भी हाथी ने हमला कर दिया, हमले में महिला का पैर टूट गया, गंभीर रूप से घायल महिला को पहले उदयपुर अस्पताल ले जाया गया, जहां से बेहतर उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर किया गया, एक तरफ घर के आसपास बैठे बुजुर्गों की सुरक्षा खतरे में है तो दूसरी तरफ खेतों में काम करने वाले किसानों और मजदूरों को भी हाथी के हमले का डर सता रहा है, ग्रामीणों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि खेती-किसानी के काम को छोड़कर घरों में बैठे रहना भी संभव नहीं है और खेतों में जाना भी जान जोखिम में डालने जैसा हो गया है।




### निगरानी से आगे बढ़कर जवाबदेही तय करने की जरूरत

*कबरा कान हाथी का मामला अब केवल एक हाथी की गतिविधियों तक सीमित नहीं रह गया है, यह सरगुजा संभाग में मानव-हाथी संघर्ष से निपटने की व्यवस्था की प्रभावशीलता का बड़ा सवाल बन चुका है,लगातार जनहानि के बाद रेडियो कॉलर लगाने का निर्णय महत्वपूर्ण जरूर है,लेकिन ग्रामीणों को केवल तकनीक और निगरानी के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता, प्रभावित गांवों में रात्रिकालीन गश्त,तत्काल सूचना पहुंचाने की व्यवस्था,प्रशिक्षित त्वरित प्रतिक्रिया दल,सुरक्षित आश्रय और हाथी प्रभावित परिवारों को समय पर सहायता उपलब्ध कराना जरूरी है,खेतों में काम करने वाले किसानों,जंगल पर निर्भर ग्रामीणों और अकेले रहने वाले बुजुर्गों के लिए विशेष सुरक्षा योजना बनाई जानी चाहिए। गांवों में सायरन,मोबाइल अलर्ट और स्थानीय वन समितियों के माध्यम से चेतावनी तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए, कबरा कान के लगातार हमलों ने यह साफ कर दिया है कि केवल हाथी की लोकेशन पता कर लेना पर्याप्त नहीं है,असली परीक्षा तब होगी जब वन विभाग को उसकी मौजूदगी की जानकारी मिले और उस जानकारी के आधार पर किसी ग्रामीण की जान बचाई जा सके,अब पूरे सरगुजा संभाग की निगाहें वन विभाग के ट्रैंकुलाइज और रेडियो कॉलर अभियान पर टिकी हैं,ग्रामीणों की उम्मीद है कि यह अभियान सिर्फ कागजी कार्रवाई बनकर न रह जाए,बल्कि उन्हें छह महीने से जारी भय और मौत के इस सिलसिले से वास्तविक राहत दिलाए।*

### 15, 16, 17 या 18 मौतें? आंकड़ों में अंतर भी बन रहा सवाल

कबरा कान हाथी के हमलों में हुई मौतों को लेकर अलग-अलग रिपोर्टों में अलग-अलग आंकड़े सामने आ रहे हैं,कुछ रिपोर्टों में छह महीने के भीतर 18 लोगों की मौत बताई गई है,जबकि 12 नवंबर को प्रकाशित कुछ रिपोर्टों में 15 और 16 लोगों के मारे जाने का उल्लेख है,इससे पहले 10 नवंबर की रिपोर्टों में 17 मौतों का आंकड़ा भी सामने आया था, मौतों के आंकड़ों में यह अंतर अपने आप में वन विभाग के लिए रिकॉर्ड और घटनाओं का एकीकृत विवरण सार्वजनिक करने की आवश्यकता को दर्शाता है,कौन-सी घटना किस वनमंडल में हुई,किस तारीख को हुई और कितने लोगों की मौत हुई,इसका स्पष्ट आधिकारिक विवरण सामने आना चाहिए, ताकि वास्तविक स्थिति का आकलन हो सके।

# जिले में मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन,6 लाख 9 हजार 271 मतदाता दर्ज

## दावा-आपत्ति दर्ज कराने की अंतिम तिथि 11 दिसंबर, 4 जनवरी 2027 को होगा अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन

-संवाददाता-

**अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।**

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत सरगुजा जिले में निर्वाचक नामावलियों का प्रारंभिक प्रकाशन 12 नवंबर 2026 को किया गया। जिला कलेक्टरेट सभाकक्ष में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में मतदाता सूची का अवलोकन कराया गया। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशुतोष कुमार देवांगन एवं जिला निर्वाचन कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे। जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा जारी जानकारी के अनुसार जिले में कुल 6 लाख 9 हजार 271 मतदाता हैं। जारी कार्यक्रम के अनुसार मतदाता सूची में दावा-आपत्ति 12 नवंबर से 11 दिसंबर 2026 तक प्रस्तुत की जा सकती है। प्राप्त दावा-आपत्तियों का निराकरण 28 दिसंबर 2026 तक किया जाएगा। इसके बाद 4 जनवरी



2027 को अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन होगा। निर्वाचन आयोग द्वारा 1 जनवरी 2027 के साथ ही 1 अप्रैल, 1 जुलाई एवं 1 अक्टूबर 2027 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले युवाओं और नए नागरिकों से प्रारूप-6 में अग्रिम आवेदन प्राप्त किए जाएंगे। इससे पात्र युवा मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाने के लिए आवेदन कर सकेंगे। इस दौरान सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों से पुनरीक्षण कार्यक्रम में सहयोग करने तथा मतदान केंद्र स्तर पर बूथ लेवल एजेंट (बीएलए) की नियुक्ति कर सूची उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया है, ताकि मतदाता सूची का पुनरीक्षण कार्य पारदर्शी एवं व्यवस्थित ढंग से पूरा किया जा सके। 12 नवंबर 2026 की स्थिति में जिले के विधानसभा क्षेत्रों में कुल 6 लाख 9 हजार 271 मतदाता दर्ज हैं। इनमें पुरुष मतदाताओं की संख्या 3 लाख 4 हजार 681, महिला मतदाताओं की संख्या 3 लाख 4 हजार 573 तथा थर्ड जेंडर मतदाताओं की संख्या 17 है। विधानसभा क्षेत्रवार विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 09 लुण्ड्रा में कुल 188685 मतदाता हैं, जिनमें 95065 पुरुष, 93616 महिला और 4 थर्ड जेंडर मतदाता हैं। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 10 अंबिकापुर में कुल 229556 मतदाता है, जिनमें 114176 पुरुष, 115369 महिला और 11 थर्ड जेंडर मतदाता हैं। इसी प्रकार विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 11 सीतापुर में कुल 191030 मतदाता हैं, जिनमें 95440 पुरुष, 95588 महिला और 2 थर्ड जेंडर मतदाता हैं।

CMYK




# मतदाता सूची में गड़बड़ी रोकने कांग्रेस का बूथ स्तर तक अभियान,टीएस सिंहदेव बोले... हर नागरिक अपने और पड़ोसियों के नाम मतदाता सूची में होने की करे पड़ताल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

मतदाता सूची में कथित गड़बड़ियों और वैध मतदाताओं के अधिकारों की रक्षा के मुद्दे पर कांग्रेस ने प्रदेशव्यापी अभियान को जमीनी स्तर पर तेज कर दिया है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर चलाए जा रहे 'वोट बचाओ,देश बचाओ' कार्यक्रम के तहत गुरुवार को सरगुजा जिला कांग्रेस कमेटी के विभिन्न संगठनात्मक ब्लॉकों के अंतर्गत आने वाले 19 मंडलों में मंडल स्तरीय जनचौपाल का आयोजन किया गया। इन चौपालों के माध्यम से कांग्रेस नेताओं ने मतदाता सूची की निगरानी, वैध मतदाताओं के नाम सुरक्षित रखने और संदिग्ध नामों की पहचान को लेकर कार्यकर्ताओं एवं आम नागरिकों को जागरूक किया। अभियान के दौरान पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव,अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा नियुक्त सरगुजा प्रभारी देवाशीष पटनायक,पूर्व कैबिनेट मंत्री अमरजीत भगत,पूर्व विधायक रामदेव राम,जिला कांग्रेस अध्यक्ष बालकृष्ण पाठक,प्रदेश महामंत्री द्वितेंद्र मिश्रा,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष मधु सिंह एवं पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष राकेश गुप्ता सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता विभिन्न मंडलों में आयोजित चौपालों में शामिल हुए। नेताओं ने अलग-अलग स्थानों पर पहुंचकर कार्यकर्ताओं से संवाद किया और मतदाता सूची से जुड़े मुद्दों पर सतर्कता बरतने की अपील की।

## वोटर कार्ड को नागरिकता का आधार बनाने की कोशिश का आरोप : टीएस सिंहदेव

अंबिकापुर के विभिन्न मंडलों में आयोजित चौपालों को संबोधित करते हुए पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने मतदाता सूची से जुड़े मुद्दों पर भाजपा सरकार को घेरा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार मतदाता पहचान पत्र को नागरिकता का आधार बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। इतना ही नहीं, राशन, आयुष्मान योजना और जमीन के पट्टे जैसी महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी योजनाओं को भी इससे जोड़ने की तैयारी की जा रही है। उन्होंने केंद्रीय मंत्री ललन सिंह के बयान का उल्लेख करते हुए इसे अपनी आशंका की पुष्टि बताया। सिंहदेव ने कहा कि मतदाता सूची को लेकर सतर्कता केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। लोगों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका स्वयं का नाम मतदाता सूची में दर्ज है या नहीं। इसके साथ ही अपने परिवार और पड़ोस में रहने वाले सरगुजा के वास्तविक एवं वैध निवासियों के नामों की भी जांच करनी चाहिए। उन्होंने मतदाता सूची में संभावित अनियमितताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि यह भी देखना आवश्यक है कि कहीं ऐसे व्यक्तियों के नाम तो मतदाता सूची में शामिल नहीं कर दिए गए हैं, जो वास्तव में सरगुजा के निवासी नहीं हैं। यदि किसी राजनीतिक दल के चुनावी हितों के लिए बाहरी या गैर निवासी व्यक्तियों के नाम मतदाता सूची में दर्ज कराए जाते हैं, तो यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया की निष्पक्षता के लिए गंभीर सवाल खड़े करता है। कांग्रेस नेताओं ने चौपालों के माध्यम से कार्यकर्ताओं को मतदाता सूची का सूक्ष्म परीक्षण करने, वैध मतदाताओं के नामों की स्थिति की जानकारी जुटाने और किसी भी प्रकार की गड़बड़ी सामने आने पर नियमानुसार आपत्ति एवं सुधार की प्रक्रिया अपनाने की दिशा में सक्रिय रहने का संदेश दिया।

## वैध मतदाताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए सतर्कता जरूरी : देवाशीष पटनायक

दरिमा ब्लॉक के करजी मंडल अंतर्गत ग्राम बेलटिकरा में आयोजित जनचौपाल को संबोधित करते हुए एआईसीसी से नियुक्त सरगुजा प्रभारी देवाशीष पटनायक ने कहा कि सरगुजा में कांग्रेस का संगठन मजबूत है और वह प्रत्येक वैध मतदाता के मताधिकार की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। मतदाता चाहे किसी भी राजनीतिक दल का समर्थक हो, उसका नाम मतदाता सूची में सुरक्षित रहना लोकतांत्रिक व्यवस्था की बुनियादी जरूरत है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार चुनाव आयोग के साथ मिलकर ऐसी व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रही है,जिससे भाजपा के समर्थक नहीं रहने वाले मतदाताओं को मताधिकार से वंचित किया जा सके। उन्होंने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की नीतियों और उनके बयानों का उल्लेख करते हुए आशंका जताई कि कहीं वैध नागरिकों को ही संदेह के दायरे में लाकर उन्हें घुसपैठिया घोषित करने की स्थिति न पैदा कर दी जाए। पटनायक ने कहा कि केवल राजनीतिक दलों के भरोसे मतदाता अधिकारों की सुरक्षा नहीं छोड़ी जा सकती। प्रत्येक नागरिक को स्वयं भी जागरूक होना होगा। अपने मतदाता पहचान और मतदाता सूची में दर्ज नाम की स्थिति की समय-समय पर जांच करना जरूरी है, ताकि किसी भी वैध मतदाता को मतदान के अधिकार से वंचित न होना पड़े।

**16 नवंबर से सरगुजा में रहेंगे नवनियुक्त प्रदेश कांग्रेस प्रभारी सुखदेव भगत :** इधर,छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नवनियुक्त प्रभारी एवं लोहरदगा के सांसद सुखदेव भगत 15 नवंबर से छत्तीसगढ़ के प्रवास पर रहेंगे। उनके सरगुजा दौरे को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी ने कार्यक्रम की जानकारी दी है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वे 16 नवंबर को सरगुजा पहुंचेंगे। इसके बाद 17 नवंबर को उदयपुर में बूथ स्तरीय चौपाल को संबोधित करेंगे। इसी दिन उनका ग्राम साल्ही पहुंचकर परसा कोल ब्लॉक से प्रभावित ग्रामीणों एवं क्षेत्रवासियों से मुलाकात करने का कार्यक्रम है। इसके बाद वे प्रेमनगर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम कांटारोली में आयोजित बूथ स्तरीय जनचौपाल में शामिल होंगे। यहां कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणों से संवाद करने के बाद वे अंबिकापुर लौटेंगे। 18 नवंबर को सुखदेव भगत जिला कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में आयोजित जिला कांग्रेस कमेटी की विस्तारित बैठक में शामिल होंगे। इसके पश्चात वे राजपुर पहुंचकर बूथ स्तरीय जनचौपाल को संबोधित करेंगे। सरगुजा का दौरा पूरा करने के बाद वे वापस लोहरदगा रवाना होंगे।

## बूथ स्तर पर संगठन को सक्रिय करने की तैयारी

*सुखदेव भगत के दौरे को कांग्रेस के संगठनात्मक विस्तार और आगामी राजनीतिक गतिविधियों के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एक ओर पार्टी 'वोट बचाओ, देश बचाओ' अभियान के माध्यम से मतदाता सूची को लेकर जनता के बीच पहुंच रही है, वहीं दूसरी ओर बूथ स्तरीय चौपालों और विस्तारित बैठकों के जरिए संगठन को सक्रिय करने की तैयारी भी कर रही है। दौरे के दौरान प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के भी सरगुजा में मौजूद रहने की संभावना है। ऐसे में आने वाले दिनों में सरगुजा की राजनीतिक गतिविधियों में कांग्रेस की सक्रियता और बढ़ने के संकेत हैं।*

## मुंह में पॉप-पॉप पटाखा रखकर चबाया फटने से दो साल के मासूम की मौत

**मसूड़ों में गंभीर चोट लगने से हुआ लगातार रक्तस्राव,बेटे का शव गोद में लेकर अस्पताल में बिलखता रहा पिता**

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

दीपावली की खुशियां एक परिवार के लिए मातम में बदल गईं। सीतापुर क्षेत्र में दो साल के मासूम ने खेलते-खेलते पॉप-पॉप पटाखा मुंह में रखकर चबा लिया। इसी दौरान पटाखा मुंह में ही फट गया। हादसे में उसके मसूड़ों में गंभीर चोट आई और लगातार खून बहने लगा। परिजन उसे लेकर अस्पताल पहुंचे, लेकिन गुरुवार सुबह अंबिकापुर के मिशन अस्पताल में उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।



जानकारी के अनुसार, सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम बनेया निवासी इंद्रजीत माझी ने दीपावली के लिए पटाखे खरीदे थे। इनमें बच्चों के लिए पॉप-पॉप पटाखे भी थे। बताया जा रहा है कि उनका दो वर्षीय बेटा आदित्य पटाखे के एक पैकेट से खेल रहा था। इसी दौरान उसने एक पटाखा मुंह में डालकर चबा लिया। मुंह में पटाखा फटने से उसके मसूड़ों से खून बहने लगा। बच्चे की हालत देखकर परिजन तत्काल उसे सीतापुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। यहां प्राथमिक उपचार के बाद वे उसे घर ले आए,लेकिन रक्तस्राव बंद नहीं हुआ। इसके बाद परिजन दोबारा अस्पताल पहुंचे। बच्चे की गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने उसे अंबिकापुर रेफर कर दिया। परिजन उसे मिशन अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उपचार शुरू किया। इसके बावजूद लगातार रक्तस्राव के कारण उसकी हालत में सुधार नहीं हुआ और गुरुवार सुबह उसने दम तोड़ दिया। मासूम की मौत के बाद अस्पताल में परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। पिता अपने कलेजे के टुकड़े का शव गोद में लेकर बिलखता रहा। इस हृदयविदारक दृश्य को देखकर वहां मौजूद लोग भी भावुक हो गए। डॉक्टरों के अनुसार, पटाखा मुंह में फटने से बच्चे के मसूड़ों में गंभीर चोट आई थी। लगातार रक्तस्राव उसकी मौत की वजह बना।

## सूने मकान का ताला तोड़कर 80 हजार रुपए के जेवर पार

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम सोनतराई में चोरों ने एक नेत्र सहायक अधिकारी के सूने मकान को निशाना बनाया। चोर घर का चैनल गेट तोड़कर अंदर घुसे और अलमारी में रखे सोने-चांदी के करीब 80 हजार रुपए के जेवरात पार कर दिए। वारदात के दौरान चोर दो गुल्लकों में रखी नकदी भी ले गए। पीड़ित की रिपोर्ट पर पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, ग्राम सोनतराई निवासी सुरेश कुमार दर्पण स्वास्थ्य विभाग में नेत्र सहायक अधिकारी के पद पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सीतापुर में पदस्थ हैं। वे 8 नवंबर की रात करीब 8 बजे अपने परिवार के साथ पुराने घर ग्राम कोट में दीपावली मनाने गए थे। 10 नवंबर की सुबह करीब 6 बजे उनके बच्चे का दोस्त ट्यूशन जाने के लिए घर पहुंचा। उसने घर का ताला टूटा होने की जानकारी दी।

# वोट बचाओ-देश बचाओ अभियान से कांग्रेस ने गांवों में तेज की राजनीतिक सक्रियता, मुसरा की जनचौपाल में एसआईआर और वोट चोरी का मुद्दा गरमाया

**पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता पर उठाए सवाल,मुख्य निर्वाचन आयुक्त के इस्तीफे की मांग दोहराई बोले...मतदाता सूची में एक भी पात्र नागरिक का नाम छूटना लोकतांत्रिक अधिकारों से जुड़ा गंभीर विषय**

-राजन पाण्डेय-
एमसीबी,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण , कथित वोट चोरी और निर्वाचन प्रक्रिया की पारदर्शिता को लेकर कांग्रेस ने अपना राजनीतिक अभियान गांवों तक पहुंचाना शुरू कर दिया है, छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर संचालित 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान के तहत ग्राम मुसरा में आयोजित जनचौपाल में पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने निर्वाचन व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए ग्रामीणों के बीच मताधिकार की सुरक्षा का मुद्दा उठाया,इस दौरान मतदाता सूची में कथित गड़बड़ियों, नामों में विसंगतियों और पात्र मतदाताओं के नाम छूटने की आशंकाओं को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। जनचौपाल में कांग्रेस ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग सहित निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने से जुड़ी अपनी मांगों को भी प्रमुखता से उठाया, कार्यक्रम के जरिए कांग्रेस ने यह संदेश देने का प्रयास किया कि मतदाता सूची का पुनरीक्षण केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के मतदान अधिकार से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय है,पार्टी का कहना है कि इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की त्रुटि या लापरवाही लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय हो सकती है।




**वोट चोरी का आरोप,निर्वाचन प्रक्रिया पर कांग्रेस के सवाल-** जनचौपाल को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं और वोट चोरी की आशंकाओं का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता को लेकर जनता के मन में उठ रहे सवालों का समाधान होना चाहिए,मतदाता सूची में नामों का गलत दर्ज होना, नाम और पते में विसंगतियां तथा पात्र मतदाताओं के नाम सूची से गायब होने जैसी शिकायतें गंभीरता से जांची जानी चाहिए,कमरो ने ग्रामीणों के बीच यह सवाल रखा कि यदि किसी पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में नहीं है या उसकी व्यक्तिगत जानकारी गलत दर्ज हो गई है, तो वह अपने मताधिकार का उपयोग कैसे कर पाएगा? उनके अनुसार मतदाता सूची में किसी भी प्रकार की त्रुटि का सीधा असर नागरिक के लोकतांत्रिक अधिकार पर पड़ सकता है,उन्होंने निर्वाचन आयोग की भूमिका पर सवाल उठाते हुए कहा कि चुनाव प्रक्रिया में जनता का विश्वास बनाए रखना आयोग की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है, ऐसे में निर्वाचन संबंधी शिकायतों का पारदर्शी तरीके से निराकरण होना चाहिए।

**एसआईआर प्रक्रिया को लेकर गांवों में पहुंची राजनीतिक बहस-** विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर देशभर में चल रही राजनीतिक बहस का असर अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिखाई देने लगा है,कांग्रेस इस प्रक्रिया को लेकर अपनी आपत्तियां और आशंकाएं ग्रामीणों तक पहुंचा रही है,ग्राम मुसरा की जनचौपाल भी इसी राजनीतिक अभियान का हिस्सा रही,गुलाब कमरो ने ग्रामीणों से कहा कि मतदाता सूची में दर्ज नाम,पता और अन्य विवरणों की जांच करना जरूरी है,यदि किसी व्यक्ति का नाम गायब है अथवा उसके विवरण में त्रुटि है तो उसे निर्धारित प्रक्रिया के तहत सुधार और दावा-आपत्ति प्रस्तुत करनी चाहिए,उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक का वोट समान महत्व रखता है,किसी गरीब, आदिवासी, ग्रामीण या दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाले नागरिक को जानकारी के अभाव में अपने मतदान अधिकार से वंचित नहीं होना चाहिए, इसलिए मतदाता सूची के पुनरीक्षण के दौरान विशेष सतर्कता और जागरूकता जरूरी है।

**निर्वाचन आयोग की जवाबदेही पर कांग्रेस ने फिर उठाया सवाल-** कार्यक्रम के दौरान कांग्रेस की ओर से मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग भी दोहराई गई,पार्टी का आरोप है कि निर्वाचन प्रक्रिया से जुड़े कई सवालों और शिकायतों पर पर्याप्त पारदर्शिता दिखाई नहीं दे रही है,कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग से प्रक्रिया की निष्पक्षता को लेकर उठ रही आशंकाओं पर स्पष्ट जवाब देने की मांग की,यह मुद्दा अब केवल राजनीतिक दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित नहीं रह गया है,बल्कि मतदाता सूची की शुद्धता और नागरिकों के मतदान अधिकार को लेकर सार्वजनिक चर्चा का विषय बन रहा है,हालांकि एसआईआर प्रक्रिया और निर्वाचन आयोग को लेकर कांग्रेस द्वारा लगाए गए आरोप पार्टी का राजनीतिक पक्ष हैं,जिनकी पुष्टि संबंधित आधिकारिक आंकड़ों और निर्वाचन रिकॉर्ड के आधार पर ही हो सकती है।

**जनचौपाल के बहाने गांवों में संगठन की सक्रियता बढ़ाने की कोशिश-** राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान कांग्रेस के लिए दो स्तरों पर महत्वपूर्ण है, एक ओर पार्टी निर्वाचन प्रक्रिया को लेकर अपने सवाल और विरोध दर्ज करा रही है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर मतदाता सूची से जुड़े मुद्दों को जनचर्चा का हिस्सा बनाने का प्रयास कर रही है, ग्राम मुसरा में आयोजित जनचौपाल इसी रणनीति के तहत आयोजित कार्यक्रम के रूप में सामने आई।

ग्रामीणों से सीधे संवाद कर पार्टी ने उन्हें मतदाता सूची की जांच करने और किसी भी विसंगति की स्थिति में निर्वाचन अधिकारियों के समक्ष शिकायत दर्ज कराने की जानकारी दी,इस तरह कांग्रेस ने मताधिकार की सुरक्षा के मुद्दे को गांवों तक पहुंचाने के साथ निर्वाचन आयोग की जवाबदेही को लेकर अपनी राजनीतिक मांगों को भी दोहराया।

**कांग्रेस पदाधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामीण रहे उपस्थित-** जनचौपाल में जिला महामंत्री रफीक मेमन, ब्लॉक अध्यक्ष ग्रामीण रामनरेश पटेल, मंडल अध्यक्ष आनंद राय, सुनील राय, रामकुमार, बाबूराम, संदीप, उर्मिला सिंह, जयराम, सोनू गुप्ता, रामप्यारे, राजकुमार, सुनील, मो. सिराज, आदित्य राय और अजय कुमार सहित कांग्रेस के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे, कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भी सहभागिता की, जनचौपाल के माध्यम से कांग्रेस ने मतदाता सूची की शुद्धता, एसआईआर प्रक्रिया और निर्वाचन आयोग की जवाबदेही को लेकर अपनी राजनीतिक मुहिम को आगे बढ़ाया, अब देखना होगा कि यह अभियान क्षेत्र के अन्य गांवों तक किस प्रकार पहुंचता है और मतदाता सूची से जुड़ी शिकायतों के निराकरण के लिए संबंधित निर्वाचन अधिकारी क्या कदम उठाते हैं, मतदान का अधिकार लोकतंत्र की बुनियाद है, इसलिए मतदाता सूची में दर्ज प्रत्येक नाम की शुद्धता, पात्र नागरिकों की भागीदारी और निर्वाचन प्रक्रिया की पारदर्शिता सुनिश्चित करना प्रशासनिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

CMYK




# गुलदस्ते के सामने क्या फीके पड़े सख्ती के तेवर?

# धान खरीदी बैठक में पुराने घोटालों पर चुप्पी चर्चा में

**धान खरीदी से पहले मंत्री की सख्ती,लेकिन पुराने घोटालों पर खामोशी! गुलदस्तों के बीच गुम हुआ कार्रवाई का सवाल**

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

धान खरीदी शुरू होने से ठीक पहले 11 नवंबर को महिला एवं बाल विकास मंत्री एवं भटगांव विधायक लक्ष्मी राजवाड़े ने अपने निवास स्थान वीरपुर में सहकारिता विभाग और जिला सहकारी बैंक के अधिकारियों तथा जिले के समिति प्रबंधकों की समीक्षा बैठक बुलाई,बैठक का उद्देश्य बताया गया–धान खरीदी वर्ष 2026-27 की तैयारियों की समीक्षा करना, किसानों को किसी प्रकार की परेशानी से बचाना और खरीदी व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करना,मंत्री ने किसानों को परेशान नहीं करने, पर्याप्त हमालों की व्यवस्था रखने,समय पर भुगतान सुनिश्चित करने और पिछले वर्ष धान खरीदी में अनियमितताओं के आरोपों से जुड़े कर्मचारियों को इस बार खरीदी कार्य से पृथक रखने के निर्देश भी दिए। पहली नजर में बैठक का रुख सख्त और किसान हितैषी दिखाई दिया,लगा कि इस बार धान खरीदी में गड़बड़ी करने वालों के लिए कोई जगह नहीं होगी,लेकिन बैठक के निर्देशों और उसके दौरान सामने आए घटनाक्रम को ध्यान से देखें तो एक बड़ा सवाल खड़ा होता है–जब पिछले वर्ष की धान खरीदी में शिकायतें हुईं,गंभीर अनियमितताओं के आरोप लगे, समाचार प्रकाशित हुए और विभागीय अधिकारियों की भूमिका पर सवाल उठे, तब उन मामलों में अब तक क्या कार्रवाई हुई, इसकी समीक्षा आखिर क्यों नहीं की गई? मंत्री ने आगामी खरीदी में अनियमितता नहीं होने देने की बात तो कही,लेकिन पिछले खरीदी सत्र की अनियमितताओं का हिसाब किसने मांगा? जिन कर्मचारियों को इस बार धान खरीदी से दूर रखने का निर्देश दिया गया,उनके विरुद्ध पिछले मामलों में जांच कहां तक पहुंची? कितने आरोप प्रमाणित हुए? किस पर कार्रवाई हुई? कितने मामले अब भी लंबित हैं? और जिन अधिकारियों पर निगरानी तथा कार्रवाई की जिम्मेदारी थी,उनसे जवाब क्यों नहीं मांगा गया? यही इस बैठक का सबसे बड़ा विरोधाभास है, आगामी खरीदी को लेकर निर्देशों की पूरी सूची तैयार है, लेकिन पिछली खरीदी की शिकायतों का हिसाब अब भी अधूरा दिखाई दे रहा है,सवाल यह है कि क्या सहकारिता विभाग में व्यवस्था सुधारने का मतलब केवल इस साल की खरीदी को व्यवस्थित करना रह गया है,या पुराने मामलों में जवाबदेही तय करना भी शासन की प्राथमिकता है?

### बैठक में मंत्री का सख्त रुख, किसानों के लिए निर्देशों की बौछार

बैठक में मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने स्पष्ट निर्देश दिए कि धान विक्रय के लिए आने वाले किसानों को किसी भी प्रकार से परेशान नहीं किया जाए,किसानों से समन्वय बनाकर खरीदी कार्य सुचारू रूप से संचालित किया जाए,खरीदी केंद्रों में पर्याप्त हमालों की व्यवस्था रखी जाए,ताकि किसानों को अपनी उपज बेचने के दौरान अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े,मंत्री ने हमालों की व्यवस्था को लेकर विशेष निर्देश दिए कि यदि किसी केंद्र में पर्याप्त हमाल उपलब्ध नहीं हैं और किसान स्वयं अपने स्तर पर धान की बोरियों में भराई, तौल, सिलाई और स्टैक में छल्ली लगाने तक का कार्य कराता है,तो शासन से प्राप्त निर्धारित राशि के अनुसार उसका भुगतान किसान को 15 दिनों के भीतर सुनिश्चित किया जाए,यह निर्देश निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है,किसान अपनी मेहनत की उपज लेकर खरीदी केंद्र पहुंचता है, उसे वहां धान बेचने के लिए मजदूरी,तौल,बोरी भराई और भुगतान जैसी समस्याओं से नहीं जूझना पड़े,यह प्रशासन की जिम्मेदारी है,लेकिन सवाल यह भी है कि पिछले वर्ष जिन किसानों को खरीदी केंद्रों में अनियमितताओं, धान की कमी, पंजीयन और अन्य गड़बड़ियों का सामना करना पड़ा,उनकी शिकायतों का क्या हुआ? क्या उन किसानों की परेशानी समाप्त हो गई? क्या शिकायतों का निराकरण कर दिया गया? क्या किसी किसान को हुए नुकसान की भरपाई हुई? यदि नहीं, तो आगामी खरीदी में किसानों को परेशान नहीं करने का निर्देश देने के साथ पुराने किसानों की शिकायतों का हिसाब भी लिया जाना चाहिए था,नए किसानों को परेशानी न हो,यह अच्छी बात है,लेकिन पिछले साल परेशान हुए किसानों को न्याय कब मिलेगा?

### अनियमितता करने वाले कर्मचारियों को खरीदी से हटाने का निर्देश, लेकिन कार्रवाई का हिसाब कहां?

बैठक का सबसे महत्वपूर्ण और चर्चा योग्य निर्देश यह रहा कि पिछले वर्ष धान खरीदी में अनियमितता करने वाले कर्मचारियों को इस बार धान खरीदी कार्य से पृथक रखा जाए,साथ ही उन्हें किसी अन्य समिति में भी संलग्न नहीं करने की बात कही गई, इस निर्देश से स्पष्ट है कि पिछले खरीदी सत्र में कर्मचारियों की भूमिका और अनियमितताओं को लेकर गंभीर सवाल मौजूद हैं,लेकिन यहीं मंत्री और विभागीय अधिकारियों के सामने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा होना चाहिए था,यदि पिछले वर्ष धान खरीदी में कर्मचारियों ने अनियमितता की थी,तो उनके विरुद्ध विभाग ने क्या कार्रवाई की? क्या जांच पूरी हुई? क्या आरोप प्रमाणित हुए? क्या किसी को निलंबित किया गया? क्या किसी से वसूली की गई? क्या किसी को सेवा से पृथक किया गया? क्या किसी अधिकारी की जिम्मेदारी तय हुई? और यदि कार्रवाई नहीं हुई,तो उसका कारण क्या है? किसी कर्मचारी को इस वर्ष धान खरीदी से दूर रखना एक प्रशासनिक निर्णय हो सकता है,लेकिन यह पिछले वर्ष की कथित अनियमितताओं का अंतिम समाधान नहीं है,यदि आरोप गंभीर हैं तो जांच पूरी कर नियमानुसार कार्रवाई करना जरूरी है,सवाल यह है कि इस बार कर्मचारियों को खरीदी से हटाने की तैयारी तो है,लेकिन पिछले साल की गड़बड़ियों का हिसाब लेने की तैयारी कहां है? क्या केवल जिम्मेदारी बदल देने से पुरानी अनियमितताओं की जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है? क्या किसी कर्मचारी को दूसरी समिति में संलग्न नहीं करने का निर्देश ही पर्याप्त कार्रवाई है? आखिर किसानों के नुकसान और सरकारी धन से जुड़ी शिकायतों का अंतिम परिणाम कौन बताएगा?

### उप पंजीयक अनिल कुमार बंज की मौजूदगी में पुराने मामलों पर समीक्षा क्यों नहीं?

बैठक में सहकारी संस्थाओं के जिला उप पंजीयक अनिल कुमार बंज,जिला सहकारी बैंक के जिला नोडल अधिकारी दिलीप दुबे और जिले के समिति प्रबंधक मौजूद रहे,ऐसे में यह बैठक केवल आगामी खरीदी की तैयारी तक सीमित रहने के बजाय पिछले सत्र की शिकायतों की समीक्षा का भी महत्वपूर्ण अवसर बन सकती थी,उप पंजीयक अनिल कुमार बंज से यह पूछा जा सकता था कि पिछले वर्ष धान खरीदी केंद्रों में सामने आई शिकायतों पर अब तक कितनी जांच हुई? कितने मामलों में अनियमितता प्रमाणित हुई? कितने कर्मचारियों और अधिकारियों पर कार्रवाई की गई? कितने मामलों में वसूली हुई? और कितने प्रकरण अब भी लंबित हैं? यदि विभाग ने जांच पूरी कर ली है, तो उसकी रिपोर्ट और कार्रवाई का विवरण सामने क्यों नहीं है? यदि जांच अधूरी है,तो उसे पूरा करने की समयसीमा क्या है? और यदि शिकायतें निराधार पाई गईं, तो उसका निष्कर्ष सार्वजनिक क्यों नहीं किया जाता? यह सवाल किसी अधिकारी को व्यक्तिगत रूप से दोषी ठहराने का नहीं,बल्कि उस पद की जवाबदेही का है जिसके पास सहकारी समितियों की निगरानी और शिकायतों पर विभागीय कार्रवाई की जिम्मेदारी है, उप पंजीयक की मौजूदगी में यदि पुराने मामलों का हिसाब भी मांगा जाता,तो बैठक का महत्व और बढ़ जाता, लेकिन उपलब्ध बैठक विवरण में ऐसी समीक्षा या कार्रवाई का ब्यौरा सामने नहीं आया।

### गुलदस्तों का स्वागत हुआ,लेकिन शिकायतों का जवाब कौन देगा?

बैठक के दौरान और उसके बाद मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े द्वारा उप पंजीयक अनिल कुमार बंज और नोडल अधिकारी दिलीप दुबे से गुलदस्ता स्वीकार करने का घटनाक्रम भी चर्चा में आया,गुलदस्ता देना और स्वीकार करना सामान्य शिष्टाचार है,किसी अधिकारी द्वारा मंत्री का स्वागत करना अपने आप में कोई गलत बात नहीं है,लेकिन जब बैठक का विषय धान खरीदी में पारदर्शिता,किसानों की समस्याएं और पिछले वर्ष की अनियमितताओं को रोकना हो,तब अधिकारियों से पुराने मामलों पर जवाब मांगना भी उतना ही जरूरी है,यहीं इस बैठक की तस्वीर में एक व्यंग्यात्मक विरोधाभास दिखाई देता है,एक ओर मंत्री का रुख अनियमितताओं पर सख्ती दिखाने वाला था,दूसरी ओर उन्हीं अधिकारियों की मौजूदगी में पिछले वर्ष की शिकायतों और जांच की स्थिति पर स्पष्ट जवाबदेही तय होने का विवरण सामने नहीं आया।

### क्या बैठक आगामी खरीदी में समन्वय बनाने तक सीमित रही?

बैठक के निर्देशों और उपलब्ध विवरण को देखें तो मुख्य जोर आगामी धान खरीदी को सुचारू बनाने, किसानों को परेशान नहीं करने,हमालों की पर्याप्त व्यवस्था,समय पर भुगतान और पिछले वर्ष अनियमितताओं के आरोपों से जुड़े कर्मचारियों को खरीदी से पृथक रखने पर रहा,इन निर्देशों का स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन किसानों के हित में बैठक तभी पूरी मानी जाएगी जब पिछली खरीदी में हुई गड़बड़ियों को जवाबदेही भी तय हो, क्योंकि यदि पिछले वर्ष किसी केंद्र में धान की कमी हुई,रकबा पंजीयन में गड़बड़ी हुई या वित्तीय अनियमितता की शिकायत आई,तो उसका समाधान केवल इस बार कर्मचारी बदल देने से नहीं होगा,इसके लिए यह जानना जरूरी है कि अनियमितता कैसे हुई, किसकी जिम्मेदारी थी,किसे लाभ मिला और विभाग ने क्या कार्रवाई की, कहीं ऐसा तो नहीं कि इस बार खरीदी में शिकायत न आए,इसके लिए पूरी तैयारी है,लेकिन पुरानी शिकायतों का जवाब देने की तैयारी अब भी अधूरी है? आगामी खरीदी के लिए निर्देशों की सूची तैयार है, लेकिन पिछली खरीदी के हिसाब की फाइल कहां है?

## भुगतान व्यवस्था पर जोर,व्यक्ति विशेष को भुगतान नहीं करने का निर्देश

बैठक में धान खरीदी के बाद किसानों को राशि का समय पर भुगतान करने का मुद्दा भी प्रमुखता से उठा, मंत्री ने जिला सहकारी बैंक को निर्देशित किया कि किसानों को धान की राशि का भुगतान समय पर किया जाए और किसी व्यक्ति विशेष को भुगतान नहीं किया जाए,समितियों में माइक्रो एटीएम के माध्यम से भी भुगतान की व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित करने के निर्देश दिए गए,भुगतान व्यवस्था में पारदर्शिता होना जरूरी है,किसान के नाम पर धान विक्रय हुआ है तो भुगतान भी नियमानुसार उसी किसान को मिलना चाहिए, किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से भुगतान या अनधिकृत लेन-देन की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए, लेकिन भुगतान की पारदर्शिता केवल बैठक में निर्देश देने से सुनिश्चित नहीं होती, इसके लिए प्रत्येक किसान के नाम पर खरीदी गई मात्रा,भुगतान की राशि,बैंक खाते और वास्तविक लेन-देन का मिलान भी आवश्यक है,यदि पिछले सत्र में भुगतान संबंधी अनियमितताओं की शिकायतें सामने आई थीं,तो उनकी जांच का परिणाम भी बैठक में सामने आना चाहिए था,मंत्री ने भविष्य में भुगतान को लेकर सावधानी बरतने का निर्देश दिया, लेकिन पिछली खरीदी में भुगतान व्यवस्था की जांच का हिसाब कौन देगा? क्या बैंक और समितियों के लेन-देन का ऑडिट हुआ? क्या शिकायतों में नामित लोगों की भूमिका की जांच की गई? क्या किसी प्रकार की गड़बड़ी प्रमाणित हुई? इन सवालों का जवाब भी किसानों के हित से ही जुड़ा है।

## गुलदस्ते का आदान-प्रदान शिष्टाचार हो सकता है, लेकिन किसानों की शिकायतों का जवाब भी तो किसी को देना होगा!

सवाल गुलदस्ता स्वीकार करने का नहीं है, सवाल यह है कि क्या उप पंजीयक से यह पूछा गया कि पिछले साल की शिकायतों पर क्या कार्रवाई हुई? क्या नोडल अधिकारी से यह जानकारी मांगी गई कि धान खरीदी केंद्रों के स्टॉक सत्यापन और अनियमितताओं की जांच का परिणाम क्या निकला? क्या मंत्री के सामने किसी अधिकारी ने पिछली खरीदी की कार्रवाई रिपोर्ट रखी? यदि ऐसा हुआ है तो विभाग को उसका विवरण सार्वजनिक करना चाहिए, और यदि नहीं हुआ, तो यह पूछना गलत नहीं होगा कि किसानों के हित में हुई बैठक में किसानों की पुरानी शिकायतों का मुद्दा क्यों पीछे रह गया?

## मंत्री की सख्ती का असली इम्तिहान अब शुरू होगा...

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने किसानों को परेशान नहीं करने और अनियमितताओं के आरोपों से घिरे कर्मचारियों को धान खरीदी से दूर रखने के निर्देश देकर एक संदेश जरूर दिया है,लेकिन अब इन निर्देशों का वास्तविक परिणाम देखना होगा, क्या विभाग उन कर्मचारियों की सूची तैयार करेगा जिन्हें खरीदी से दूर रखा जाना है? क्या उनके विरुद्ध लंबित मामलों की जांच पूरी करेगा? क्या उप पंजीयक और नोडल अधिकारी से नियमित कार्रवाई रिपोर्ट मांगी जाएगी? क्या पिछले छह वर्षों की शिकायतों और धान खरीदी के रिकॉर्ड की समीक्षा होगी? क्या किसानों को भुगतान और हमालों की मजदूरी के संबंध में दिए गए निर्देशों का पालन सुनिश्चित किया जाएगा? मंत्री के निर्देश तभी प्रभावी माने जाएंगे जब उनका पालन जमीन पर दिखाई देगा और पुराने मामलों में भी जवाबदेही तय होगी। केवल बैठक में सख्ती दिखाना पर्याप्त नहीं है, असली सख्ती तब दिखाई देगी जब प्रभावशाली हो या सामान्य कर्मचारी, आरोप प्रमाणित होने पर नियमानुसार कार्रवाई हो।

## दिलीप दुबे की भूमिका और बैठक के आयोजन को लेकर भी सवाल

बैठक में जिला सहकारी बैंक के नोडल अधिकारी दिलीप दुबे भी मौजूद थे। उपलब्ध जानकारी के अनुसार बैठक मंत्री के निवास स्थान वीरपुर में आयोजित हुई और इसके आयोजन में उनकी भूमिका बताई जा रही है, यह भी चर्चा है कि दिलीप दुबे मंत्री के गांव वीरपुर से आते हैं, हालांकि बैठक का आयोजन किसके प्रस्ताव पर हुआ,किसने समन्वय किया और किन अधिकारियों को आमंत्रित किया गया, इसका आधिकारिक विवरण सामने आना चाहिए। केवल किसी अधिकारी का स्थानीय संबंध या बैठक में मौजूदगी किसी गलत भूमिका का प्रमाण नहीं है। लेकिन जब बैठक का उद्देश्य सहकारी समितियों और धान खरीदी की समीक्षा हो, तब उसके आयोजन और एजेंडे की पारदर्शिता भी महत्वपूर्ण है, सबसे बड़ा सवाल फिर वही है–क्या बैठक का एजेंडा केवल आगामी खरीदी की तैयारी था, या पिछले वर्ष की अनियमितताओं की समीक्षा भी होनी चाहिए थी? यदि बैठक में पुराने मामलों की समीक्षा शामिल नहीं थी, तो क्या मंत्री को उन मामलों की अलग से रिपोर्ट नहीं मांगनी चाहिए थी?

**मंत्री के तेवर सख्त,अधिकारियों के हाथ गुलदस्ते! पुराने धान खरीदी घोटालों पर कार्रवाई का हिसाब कौन देगा?**

**गुलदस्ते का स्वागत हुआ,निर्देशों की बौछार हुई, मगर पुराने घोटालों का हिसाब फिर गायब!**

**नई धान खरीदी में गड़बड़ी न हो इसकी चिंता,लेकिन पिछली गड़बड़ियों पर कार्रवाई की चिंता किसे?**

**किसानों को परेशान मत करो,मंत्री का फरमान! लेकिन पिछले साल की गड़बड़ियों पर कार्रवाई का हिसाब कौन देगा?**

**गड़बड़ी करने वालों को खरीदी से हटाओ,लेकिन उनके विरुद्ध कार्रवाई कब? मंत्री की बैठक ने खड़े किए बड़े सवाल**

**गुलदस्तों से स्वागत,निर्देशों से व्यवस्था! लेकिन किसानों की पुरानी शिकायतों का हिसाब कौन देगा?**

**धान खरीदी की समीक्षा या अधिकारियों से समन्वय की बैठक? पुराने घोटालों पर जवाबदेही तय करने की पहल नदारद**

**मंत्री ने कहा किसानों को परेशान मत करो, लेकिन किसानों को परेशान करने वालों पर कार्रवाई का सवाल अनुत्तरित!**

**उप पंजीयक अनिल कुमार बंज और नोडल अधिकारी दिलीप दुबे की मौजूदगी में हुई बैठक पर सवाल–नई खरीदी की चिंता तो है, पुराने गड़बड़ियों का हिसाब कौन लेगा?**

## मंत्री के सामने उठने चाहिए थे ये सीधे सवाल, बैठक में मौजूद अधिकारियों से निम्न सवालों का जवाब मांगा जाता तो किसानों के सामने कई महत्वपूर्ण तथ्य आ सकते थे...

1. पिछले धान खरीदी सत्र में जिले की समितियों और खरीदी केंद्रों के विरुद्ध कितनी शिकायतें प्राप्त हुईं?
2. कितनी शिकायतों की जांच पूरी हुई और कितने मामले अब भी लंबित हैं?
3. धान शॉर्टेज के मामलों में कितनी कमी प्रमाणित हुई और कितनी राशि की वसूली की गई?
4. फर्जी रकबा पंजीयन की शिकायतों पर राजस्व और सहकारिता विभाग ने संयुक्त जांच की या नहीं?
5. जिन कर्मचारियों को इस बार खरीदी से पृथक रखने का निर्देश दिया गया, उनके विरुद्ध विभागीय कार्रवाई की वर्तमान स्थिति क्या है?
6. क्या किसी अधिकारी या कर्मचारी की जिम्मेदारी तय हुई? यदि हुई तो कार्रवाई का विवरण क्या है?
7. क्या पिछले वर्ष के धान खरीदी रिकॉर्ड, स्टॉक सत्यापन, मिलों को भेजे गए धान और भुगतान का मिलान कराया गया?
8. जिन शिकायतों पर कार्रवाई नहीं हुई, उनके लंबित रहने का कारण क्या है और उनका निराकरण कब तक होगा?

इन सवालों का जवाब मिलना ही वास्तविक समीक्षा होती, अन्यथा बैठक में निर्देश देना और उन निर्देशों का पालन कराने की जिम्मेदारी तय करना दो अलग-अलग बातें हैं।

## गुलदस्ते से नहीं,कार्रवाई से जीता जाएगा किसानों का भरोसा

सहकारिता व्यवस्था किसानों के भरोसे पर चलती है,किसान अपनी उपज लेकर समिति पहुंचता है और उम्मीद करता है कि उसकी उपज का सही वजन होगा,भुगतान समय पर मिलेगा और उसके नाम पर कोई अनियमितता नहीं होगी, लेकिन यदि पिछले सत्र की शिकायतें अनुत्तरित रहें और जिम्मेदारी तय न हो,तो आगामी खरीदी के लिए दिए गए निर्देश भी किसानों के मन में भरोसा पैदा नहीं कर पाएंगे,गुलदस्ते से स्वागत हो सकता है,बैठक से निर्देश जारी हो सकते हैं और कागजों पर व्यवस्था भी बनाई जा सकती है,लेकिन किसानों का भरोसा केवल निष्पक्ष जांच और ठोस कार्रवाई से ही जीता जा सकता है,अब देखना यह है कि मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े आगामी धान खरीदी में किसानों को परेशान नहीं करने के निर्देशों के साथ पिछले सत्र की अनियमितताओं का हिसाब भी मांगती हैं या नहीं,उप पंजीयक अनिल कुमार बंज और नोडल अधिकारी दिलीप दुबे पिछले मामलों की जांच तथा कार्रवाई का ब्यौरा सार्वजनिक करते हैं या नहीं। और सहकारिता विभाग केवल आगामी खरीदी की तैयारी करता है या पुरानी शिकायतों का हिसाब भी खोलता है, क्योंकि किसानों को इस बार केवल सुचारू धान खरीदी नहीं चाहिए, उन्हें पिछले साल की गड़बड़ियों का जवाब भी चाहिए, सवाल साफ है—नई खरीदी के लिए तैयारी पूरी है,लेकिन पुराने घोटालों की जवाबदेही की तैयारी कब होगी?




# छह मौतों के बाद भी नहीं जागा परिवहन विभाग, मनेन्द्रगढ़-निवास मार्ग पर परमिट का खेल जारी!

## दो बसों का परमिट, एक बस से संचालन...यात्रियों की जान से खिलवाड़ का आरोप

**दो बसों का परमिट,एक बस से संचालन...यात्रियों की जिंदगी से आखिर कब तक होगा खिलवाड़?**

**हादसों में जा रही जान,परिवहन विभाग मेहरबान! बस संचालकों की मनमानी पर कार्रवाई कौन करेगा?**

**छह मौतें भी नहीं खोल सकीं परिवहन विभाग की नींद,ओवरलोड बसों पर आखिर किसका संरक्षण?**

**परमिट सरकारी,मनमानी निजी...मनेन्द्रगढ़-निवास मार्ग पर बस संचालकों का कथित एकाधिकार!**

**यात्रियों की सुरक्षा भगवान भरोसे,परिवहन विभाग की निगरानी सिर्फ कागजों पर!**

**दस परमिट,संचालन का कथित खेल...एक बस में ठूंस रहे सवारियां, विभाग क्यों बना मूकदर्शक?**

**हादसों से भी सबक नहीं! बस संचालकों की मनमानी के आगे परिवहन विभाग नतमस्तक?**

**केल्हारी और राजहंस बस हादसों के बाद भी नहीं बदली व्यवस्था,क्या परिवहन विभाग किसी और बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है?**

**शिकायतों के बावजूद कार्रवाई नहीं होने से अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर उठे सवाल**

- रवि सिंह-

**मनेन्द्रगढ़/एमसीबी,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।**

मनेन्द्रगढ़-केल्हारी मार्ग पर हुए भीषण यात्री बस हादसे में छह लोगों की मौत के बाद भी यदि परिवहन विभाग की कार्यप्रणाली में कोई ठोस बदलाव नजर नहीं आता, तो यह केवल विभागीय लापरवाही का मामला नहीं, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा के प्रति सरकारी व्यवस्था की गंभीर संवेदनहीनता का सवाल बन जाता है, जिले में लगातार सामने आ रहे बस हादसों ने यात्री परिवहन व्यवस्था की वास्तविक स्थिति उजागर कर दी है, एक तरफ सड़क हादसों में लोगों की जान जा रही है,दूसरी तरफ ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में चलने वाली बसों के संचालन को लेकर ओवरलोडिंग,परमिट के कथित दुरुपयोग,समय-सारणी में अनियमितता और निर्धारित यात्री क्षमता से अधिक सवारियां बैठाने जैसी शिकायतें लगातार सामने आ रही हैं। सबसे गंभीर आरोप मनेन्द्रगढ़ से जनकपुर होते हुए (मप्र) निवास तक चलने वाली जनता सुपर और तरभा बसों को लेकर हैं,यात्रियों और स्थानीय स्तर से मिल रही शिकायतों के अनुसार,इन बसों के संचालकों ने छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश दोनों राज्यों से अलग-अलग परमिट प्राप्त कर रखे हैं,लेकिन कथित तौर पर निर्धारित समय पर अलग-अलग बसों का संचालन करने के बजाय एक ही बस से यात्रियों को ढोया जा रहा है,आरोप है कि यह स्थिति पिछले लगभग दस वर्षों से बनी हुई है, यदि यह तथ्य सही है,तो सवाल केवल परमिट की वैधता का नहीं,बल्कि यात्रियों को उपलब्ध कराई जाने वाली परिवहन सुविधा और उनकी सुरक्षा का भी है।

**दस रूटों पर परमिट, लेकिन यात्रियों को सुविधा कितनी?**-जानकारी के अनुसार मनेन्द्रगढ़ से जनकपुर,सीधी और निवास की ओर विभिन्न मार्गों पर लगभग दस बस परमिट आवंटित किए गए हैं,इनका उद्देश्य ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को नियमित यात्री परिवहन सुविधा उपलब्ध कराना है, लेकिन स्थानीय यात्रियों की शिकायत है कि परमिट की संख्या के अनुपात में बसों का संचालन नहीं हो रहा है, आरोप है कि कुछ बस संचालकों ने वर्षों से इन मार्गों पर अपना प्रभाव स्थापित कर रखा है, निर्धारित समय पर अलग-अलग बसें चलाने के बजाय एक ही बस से कई समय की सवारियों को ढोया जाता है, परिणामस्वरूप यात्रियों को बसों का इंतजार करना पड़ता है और जब बस आती है तो उसमें क्षमता से कहीं अधिक लोगों को बैठाने की स्थिति बन जाती है,यहां सवाल यह भी है कि जिन परमिटों का आवंटन जनसुविधा के लिए किया गया है,क्या उनका उपयोग वास्तव में उसी उद्देश्य से हो रहा है? क्या परिवहन विभाग ने कभी रूटवार परमिट और वास्तविक बस संचालन का भौतिक सत्यापन कराया है?

**केल्हारी हादसे ने खोली व्यवस्था की पोल, दो बसों की सवारी एक में बैठाने का आरोप**-हाल ही में केल्हारी के पास हुई भीषण बस दुर्घटना ने यात्री परिवहन व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं,इस दुर्घटना को लेकर स्थानीय स्तर पर जो जानकारी सामने आ रही है,उसके अनुसार संबंधित बस के लिए दो अलग-अलग समय निर्धारित थे,पहली बस का समय सुबह 11 बजे और दूसरी का समय 11:45 बजे बताया गया है,आरोप है कि पहली बस कठौतिया में जाकर खड़ी हो गई थी,इसके बाद दूसरी बस वहां पहुंची तो दोनों बसों की सवारियों को एक ही बस में बैठाकर केल्हारी की ओर रवाना किया गया,बताया जाता है कि बस संचालक को वापसी का समय दोपहर एक बजे पकड़ना था। इसी वजह से बस को तेज गति से चलाए जाने की बात भी सामने आई है, हालांकि दुर्घटना के वास्तविक कारणों का निर्धारण जांच और आधिकारिक रिपोर्ट से ही होगा, लेकिन यदि निर्धारित समय की दो बसों की सवारियों को एक ही बस में बैठाकर रवाना किया गया था,तो यह अपने आप में अत्यंत गंभीर जांच का विषय है,क्या दुर्घटना से पहले बस में निर्धारित क्षमता से अधिक यात्री मौजूद थे? क्या चालक पर समय से पहुंचने का दबाव था? क्या बस की गति और संचालन की निगरानी की गई थी? इन सभी पहलुओं की निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

**राजहंस बस हादसा भी उठा चुका है संचालन व्यवस्था पर सवाल**-इसी तरह कुछ दिन पहले राजहंस बस दुर्घटना का मामला भी सामने आया था,स्थानीय स्तर पर प्राप्त जानकारी के अनुसार राजहंस बस की एक सेवा मनेन्द्रगढ़ से रांची और दूसरी चिरमिरी से रांची के लिए संचालित होती है,आरोप है कि दोनों सेवाओं के परमिट और वास्तविक संचालन के बीच अंतर है तथा चिरमिरी मार्ग की बस को मनेन्द्रगढ़ से संचालित किए जाने की शिकायत भी रही है,यह भी आरोप लगाया जा रहा है कि जब एक बस निर्धारित समय से विलंबित होती है तो दूसरी बस की सवारियों को भी उसी में बैठाकर रवाना कर दिया जाता है,राजहंस बस दुर्घटना के दिन भी बस के विलंब से चलने और तेज गति से आने की बात स्थानीय स्तर पर कही जा रही है। इसी दौरान कुदरगढ़ दर्शन के लिए जा रही बोलेरो से बस की टक्कर हुई, जिसमें लोगों की जान गई,इस दुर्घटना के कारणों और जिम्मेदारी का निर्धारण जांच रिपोर्ट के आधार पर होना चाहिए,लेकिन यदि बसों के संचालन में समय-सारणी की अनदेखी और अतिरिक्त यात्रियों को बैठाने की प्रवृत्ति सामने आती है, तो परिवहन विभाग की जिम्मेदारी तय करना भी जरूरी है।

**शिकायतों के बावजूद कार्रवाई क्यों नहीं?**-स्थानीय स्तर पर इन बसों के संचालन को लेकर छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के परिवहन विभागों में शिकायतें किए जाने की बात सामने आ रही है, इसके बावजूद यात्रियों का आरोप है कि व्यवस्था में कोई ठोस सुधार नहीं हुआ है, यहां सबसे बड़ा सवाल परिवहन विभाग के अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर है,क्या विभाग केवल सड़क पर वाहनों को रोककर चालान काटने तक अपनी जिम्मेदारी सीमित समझता है? क्या परमिट की शर्तों,बसों की यात्री क्षमता, फिटनेस,बीमा, समय-सारणी और अंतरराज्यीय संचालन की नियमित जांच की जाती है? यदि शिकायतें विभाग तक पहुंच रही हैं और इसके बाद भी बसों का संचालन उसी तरह जारी है, तो अधिकारियों को अपनी चुप्पी का जवाब देना चाहिए।

**दूसरे बस संचालकों को मार्ग पर संचालन से रोकने के आरोप भी गंभीर**-स्थानीय स्तर पर यह शिकायत भी सामने आ रही है कि मनेन्द्रगढ़-जनकपुर-(मप्र) निवास मार्ग पर अन्य बस संचालकों ने जब बस सेवा शुरू करने का प्रयास किया तो उन्हें कथित रूप से विरोध और दबाव का सामना करना पड़ा, कुछ संचालकों ने शिकायत की कि उनके विरुद्ध झूठी शिकायतें कराई गईं तथा स्थानीय स्तर पर दबाव बनाकर बस संचालन बंद कराने की कोशिश हुई,हालांकि इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है,लेकिन यदि किसी मार्ग पर कुछ बस संचालकों का एकाधिकार स्थापित हो गया है और दूसरे संचालकों को प्रतिस्पर्धा से रोका जा रहा है,तो यह भी प्रशासनिक जांच का विषय है,जनता के लिए आवंटित मार्ग किसी निजी बस संचालक की जागीर नहीं हो सकते। परमिट की व्यवस्था सार्वजनिक परिवहन सुविधा के लिए है,न कि किसी को मनमाने तरीके से मार्ग पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का अधिकार देने के लिए।

**जनता सुपर और तरभा बस के परमिट पर उठे सवाल**- स्थानीय स्तर पर मिली जानकारी के अनुसार जनता सुपर बस के संचालक के संबंध में मध्यप्रदेश में अब्दुल अजीज तथा छत्तीसगढ़ में इम्तियाज बेगम के नाम पर परमिट होने की बात कही जा रही है, वहीं तरभा बस के मामले में तेजमल हुसैन और उनके बेटों के नाम पर परमिट होने की जानकारी सामने आई है,इन जानकारियों की आधिकारिक पुष्टि अभी संबंधित परिवहन कार्यालयों के परमिट रिकॉर्ड से होना शेष है। इसलिए दोनों राज्यों के परिवहन विभागों को परमिटधारकों,वास्तविक बस मालिकों, संचालन करने वाले वाहनों और परमिट की शर्तों का मिलान करना चाहिए,यह भी जांच जरूरी है कि क्या एक ही वाहन का उपयोग अलग-अलग परमिट और समय-सारणी के तहत किया जा रहा है? क्या प्रत्येक परमिट के अनुरूप निर्धारित वाहन वास्तव में मार्ग पर संचालित हैं? क्या बसों के फिटनेस प्रमाणपत्र, बीमा,कर भुगतान और अन्य वैधानिक दस्तावेज अद्यतन हैं?

**परिवहन विभाग के सामने जनता के सीधे सवाल...**

1. क्या मनेन्द्रगढ़ से निवास और जनकपुर मार्ग पर जारी सभी परमिटों का भौतिक सत्यापन किया गया है?
2. यदि दो अलग-अलग समय पर दो बसों का परमिट है,तो क्या वास्तव में दोनों बसों का संचालन हो रहा है?
3. क्या एक ही बस में दो अलग-अलग समय की सवारियों को बैठाकर ले जाना परमिट की शर्तों के अनुरूप है?
4. बसों में 100 से 120 यात्रियों को बैठाने और छत पर सवारियां ले जाने की शिकायतों पर अब तक क्या कार्रवाई हुई?
5. केल्हारी और राजहंस बस हादसों के बाद संबंधित बसों के परमिट, फिटनेस और संचालन व्यवस्था की जांच की गई या नहीं?
6. क्या दोनों राज्यों के परिवहन विभागों के बीच अंतरराज्यीय परमिट और वास्तविक बस संचालन को लेकर समन्वित जांच हुई है?
7. यदि किसी मार्ग पर कुछ बस संचालकों द्वारा दूसरे संचालकों को संचालन से रोकने की शिकायत है, तो इसकी जांच कौन करेगा?
8. क्या परिवहन विभाग किसी और बड़े हादसे के बाद ही जागेगा?

### दो बसों का परमिट,एक बस से संचालन का आरोप

मनेन्द्रगढ़ से निवास की ओर जाने वाले मार्ग पर जनता सुपर और तरभा बसों के संचालन को लेकर जो जानकारी सामने आ रही है,वह परिवहन विभाग की निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े करती है,बताया जा रहा है कि जनता सुपर बस के लिए दो अलग-अलग समय निर्धारित हैं, पहली बस का समय सुबह 4:45 बजे और दूसरी का समय सुबह 5:30 बजे बताया जा रहा है,इसके बावजूद आरोप है कि दोनों समय की सवारियों को एक ही बस में बैठाकर रवाना किया जाता है, इसी तरह तरभा बस के संचालन को लेकर भी दो परमिट और एक बस से परिचालन किए जाने की शिकायत है,यात्रियों का कहना है कि दो बसों के समय और परमिट का लाभ कागजों में लिया जा रहा है, जबकि वास्तविकता में एक ही बस पर यात्रियों का अतिरिक्त दबाव बनाया जाता है,यदि ऐसा है तो परिवहन विभाग को यह स्पष्ट करना चाहिए कि संबंधित परमिट पर वास्तव में कितनी बसें संचालित हो रही हैं और निर्धारित समय-सारणी का पालन क्यों नहीं कराया जा रहा है?

### बस के भीतर जगह नहीं तो छत पर सवारियां! ओवरलोडिंग का गंभीर आरोप

मनेन्द्रगढ़ से जनकपुर और निवास की ओर चलने वाली बसों को लेकर सबसे चिंताजनक शिकायत ओवरलोडिंग की है,यात्रियों के अनुसार कुछ बसों में प्रतिदिन 100 से 120 तक यात्री बैठाए जाने का आरोप है,केल्हारी क्षेत्र में बस की छत पर यात्रियों को बैठाकर ले जाने की शिकायतें भी सामने आई हैं,आरोप है कि बसों की छत पर केबिन और सामान रखने की व्यवस्था के ऊपर भी यात्रियों को बैठाया जाता है,यदि यह शिकायत सही है तो यह यात्रियों की सुरक्षा के साथ गंभीर खिलवाड़ है,चलती बस की छत पर यात्रा करना किसी भी परिस्थिति में सुरक्षित यातायात व्यवस्था का हिस्सा नहीं हो सकता,सवाल यह है कि जब बसें प्रतिदिन इन मार्गों से गुजरती हैं,तो परिवहन विभाग के जांच दल और पुलिस की नजरों से ऐसी गतिविधियां कैसे बच जाती हैं? क्या विभाग को इन बसों की यात्री क्षमता और वास्तविक सवारियों की संख्या की जानकारी नहीं है? क्या कभी औचक जांच कर यात्रियों की संख्या का मिलान किया गया है?

### अब कागजी कार्रवाई नहीं, धरातल पर जांच की जरूरत...

मनेन्द्रगढ़-जनकपुर-निवास मार्ग पर यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अब केवल औपचारिक जांच पर्याप्त नहीं होगी, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के परिवहन विभागों को संयुक्त रूप से विशेष जांच अभियान चलाना चाहिए, प्रत्येक परमिट के विरुद्ध वास्तविक बस का सत्यापन किया जाए, निर्धारित समय-सारणी, यात्री क्षमता, फिटनेस, बीमा, टैक्स और अंतरराज्यीय संचालन की शर्तों की जांच होनी चाहिए, बसों की छत पर यात्रियों को बैठाने, क्षमता से अधिक सवारियां ढोने और निर्धारित परमिट के विपरीत संचालन की शिकायत प्रमाणित होने पर तत्काल नियमानुसार कार्रवाई की जानी चाहिए, साथ ही हादसों में शामिल बसों की तकनीकी स्थिति और दुर्घटना के कारणों की जांच रिपोर्ट भी सार्वजनिक की जानी चाहिए, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन मार्गों पर ग्रामीणों और आम यात्रियों की निर्भरता बस सेवाओं पर है,वहां परमिटधारकों को निर्धारित शर्तों के अनुसार नियमित सेवा उपलब्ध कराने के लिए जवाबदेह बनाया जाए, दो बसों के परमिट लेकर एक बस से संचालन किए जाने का आरोप सही है तो इसकी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए,आखिर ग्रामीणों की जिंदगी की कीमत क्या केवल बस संचालकों के मुनाफे और परिवहन विभाग की औपचारिक कार्रवाई तक सीमित रह गई है? छह लोगों की मौत के बाद भी यदि व्यवस्था नहीं सुधरती, तो अगली दुर्घटना के लिए जिम्मेदार कौन होगा? यात्रियों को सुरक्षित सफर का अधिकार है, किसी बस संचालक की मनमर्जी का बोझ उठाने की मजबूरी नहीं।

# 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान को वार्डों तक ले जाने की तैयारी,बैकुंठपुर में जन चौपाल का आगाज

- **वार्ड क्रमांक 8 चेर में मंडल स्तरीय जनसंवाद,मताधिकार की सुरक्षा और निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता को लेकर कांग्रेस ने नागरिकों को किया जागरूक**
- **प्रदीप गुप्ता, नजीर अजहर,योगेश शुक्ला और अशोक जायसवाल ने रखे अपने विचार; अभियान के पर्चे बांटकर जन-जन तक पहुंचने का किया आह्वान**

**-संवाददाता-**

**बैकुंठपुर/कोरिया,12 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।**

लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा, मतदाता सूची की विश्वसनीयता और निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग को लेकर कांग्रेस का 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान अब वार्ड स्तर तक पहुंचने लगा है, इसी क्रम में बैकुंठपुर नगर पालिका क्षेत्र में मंडल स्तरीय जन चौपाल संवाद कार्यक्रम की शुरुआत वार्ड क्रमांक 8 चेर से की गई, आयोजित चौपाल में कांग्रेस नेताओं ने स्थानीय नागरिकों से संवाद कर अभियान के उद्देश्यों,मताधिकार की महत्ता और लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक मतदाता की भूमिका पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता, पूर्व जिला अध्यक्ष नजीर अजहर, पीसीसी सदस्य योगेश शुक्ला तथा पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष एवं जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष अशोक जायसवाल ने संबोधित किया,इस दौरान अभियान से संबंधित पर्चे नागरिकों के बीच वितरित किए गए और मतदाता अधिकारों की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया गया।

**प्रदीप गुप्ता ने मताधिकार की सुरक्षा को बताया लोकतंत्र की मजबूती का आधार**- जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता ने अपने संबोधन में 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, उन्होंने मताधिकार को लोकतंत्र की बुनियादी ताकत बताते हुए कहा कि प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में होना और उसके वोट का अधिकार सुरक्षित रहना आवश्यक है, उन्होंने नागरिकों से अपने मताधिकार के प्रति जागरूक रहने और अभियान को जन-जन तक पहुंचाने की अपील की।



**नजीर अजहर ने निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता पर दिया जोर**- पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष नजीर अजहर ने अपने संबोधन में मतदाता सूची की विश्वसनीयता और निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता की आवश्यकता पर जोर दिया, उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए निर्वाचन से जुड़ी प्रक्रियाओं का पारदर्शी होना जरूरी है, अभियान के माध्यम से इन मुद्दों पर नागरिकों के बीच जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता भी उन्होंने रेखांकित की।

**योगेश शुक्ला ने बूथ और वार्ड स्तर तक अभियान पहुंचाने का किया आह्वान**- पीसीसी सदस्य योगेश शुक्ला ने अपने विचार रखते हुए अभियान को संगठनात्मक बैठकों तक सीमित न रखने की बात कही। उन्होंने बूथ, वार्ड और पंचायत स्तर पर नागरिकों से सीधे संवाद स्थापित करने तथा मतदाता सूची से जुड़ी जानकारियों के प्रति लोगों को जागरूक करने पर जोर दिया,उन्होंने अभियान को व्यापक जनभागीदारी से जोड़ने का आह्वान किया।

**अशोक जायसवाल ने नागरिकों से अपने मताधिकार के प्रति सजग रहने की अपील की**- पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष एवं जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष अशोक जायसवाल ने अपने संबोधन में मताधिकार को लोकतंत्र का महत्वपूर्ण अधिकार बताया, उन्होंने नागरिकों से मतदाता सूची में अपने नाम और विवरण की जांच करने तथा किसी भी त्रुटि या विसंगति की स्थिति में निर्धारित प्रक्रिया के तहत सुधार कराने के प्रति जागरूक रहने की अपील की।

**पर्चे बांटकर 'वोट बचाओ-देश बचाओ' अभियान से जुड़ने का संदेश**- जन चौपाल के दौरान कांग्रेस पदाधिकारियों ने अभियान से संबंधित पर्चे नागरिकों के बीच वितरित किए, कांग्रेस नेताओं ने मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं और वोट चोरी के आरोपों को लेकर अपनी चिंता जाहिर करते हुए लोगों से अभियान के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने का आह्वान किया, कांग्रेस का कहना है कि इस अभियान का उद्देश्य प्रत्येक पात्र मतदाता के अधिकारों की रक्षा, निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता का विश्वास मजबूत करना है,इसके लिए वार्डों और बूथों में जनसंवाद के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाएगा।

**संगठन के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक रहे उपस्थित**- कार्यक्रम में जिला कांग्रेस कमेटी महामंत्री बृजवासी तिवारी, ब्लॉक कांग्रेस शहर अध्यक्ष आशीष यादव 'लल्ला', जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष अजय सिंह, रियाजउद्दीन, धीरज सिंह, रामायण सिंह, नेता प्रतिपक्ष अन्नपूर्णा प्रभाकर सिंह, पार्षद अंकित गुप्ता एवं ललिता सिंह सहित कांग्रेस पदाधिकारी, कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे, वार्ड क्रमांक 8 चेर से शुरू हुई इस जन चौपाल के माध्यम से कांग्रेस ने बैकुंठपुर नगर पालिका क्षेत्र में अभियान को वार्ड स्तर तक विस्तार देने की शुरुआत की है।

CMYK

# छठ पूजा से पहले आयुष्मान खुराना की 'ये प्रेम मोल लिया' का 'बुलाए छठी मां' गाना रिलीज, सुनकर भावुक हो जाएंगे भक्त

आयुष्मान खुराना और शरवरी की फिल्म ये प्रेम मोल लिया का नया गाना बुलाए छठी मां रिलीज हो गया है, जिसे श्रेया घोषाल और केशव आनंद ने गाया है। छठी मैया का यह गीत आपको भावुक कर देगा। बॉलीवुड फिल्मों में भी छठ पूजा को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। पहले फिल्म द वन और अब फिल्म ये प्रेम मोल लिया में छठी मां की पूजा का महत्व दिखाया जाएगा। वहीं, मेकर्स ने छठ पूजा के पहले आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ की फिल्म ये प्रेम मोल लिया का नया गाना रिलीज किया गया, जिसका नाम है बुलाए छठी मां। यह छठ गीत 13 नवंबर को सोशल मीडिया और यूट्यूब पर शेयर किया है,जिसे दर्शक खूब पसंद कर रहे हैं। गाने में आयुष्मान और शरवरी अपने पूरे परिवार के साथ छठ पूजा करते दिखाई दे रहे हैं। इससे पहले इसी फिल्म का सावन आया है गाना रिलीज हुआ था,जो लोगों को बहुत पसंद आया।



**बुलाए छठी मां गाना रिलीज**

ये प्रेम मोल लिया के मेकर्स ने बुलाए छठी मां गाना रिलीज करते हुए, कैप्शन में लिखा,कुछ त्योहार धूमधाम से मनाए जाते हैं तो कुछ पूरे दिल से। ये प्रेम मोल लिया के साथ छठ पूजा की आत्मीयता का अनुभव करें। इस फिल्म के जरिए कई सालों बाद सूरज बड़जात्या ने हिमेश रेशमिया के साथ हाथ मिलाया है और उनके गाने अच्छा फीडबैक मिल रहा है। गाने के रिलीज होते ही फैंस ने तारीफ करना शुरू कर दिया है और कमेंट सेक्शन में छठी मैया को याद कर रहे हैं।

**ये प्रेम मोल लिया कब होगी रिलीज**

फिल्म ये प्रेम मोल लिया का निर्देशन सूरज आर. बड़जात्या ने किया है और इसे राजश्री प्रोडक्शंस ने महावीर जैन फिल्म्स के साथ मिलकर प्रोड्यूस किया है। ये फिल्म 27 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है, जिसे राजश्री प्रोडक्शंस और महावीर जैन फिल्म्स द्वारा एक बड़े पर्दे की फैमिली एंटरटेनर के तौर पर पेश किया जा रहा है।

**आयुष्मान खुराना की आने वाली फिल्म**

फिल्म ये प्रेम मोल लिया के अलावा आयुष्मान खुराना की अपकमिंग फिल्म में मुपापा का नाम भी शामिल है, जिसमें श्रेया चौधरी नजर आने वाली हैं। श्रेया चौधरी ने डियर माया फिल्म से अपना डेब्यू किया, जिसमें उन्होंने इरा का किरदार निभाया था। समीर सक्सेना के निर्देशन में बन रही मुपापा का निर्माण यश राज फिल्म्स के सीईओ अक्षय विधानी और पोशम पा पिक्चर्स ने किया है। यह फिल्म अगले साल यानी 19 फरवरी 2027 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। हाल ही में आयुष्मान खुराना की एक्शन-कॉमेडी फिल्म उड़ता तीर रिलीज हुई थी, जिसमें आयुष्मान खुराना और सारा अली खान लीड रोल में थे।



# अपनी प्रोफेशनल चॉइस को लेकर कियारा का बड़ा बयान

बॉलीवुड की चर्चित जोड़ियों में शामिल सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की प्रेम कहानी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। हर लव स्टोरी की अपनी एक खास कहानी होती है,लेकिन कुछ रिश्तों में प्यार के साथ दूरियां,ब्रेकअप और सेकेंड चांस का ट्विस्ट भी देखने को मिलता है। सिद्धार्थ और कियारा की लव स्टोरी में भी कुछ ऐसा ही हुआ। एक पार्टी में पहली मुलाकात से शुरू हुआ दोनों का सफर फिल्म शेरशाह के सेट पर बढ़ती नजदीकियों तक पहुंचा। हालांकि,इस रिश्ते में एक समय ऐसा भी आया,जब दोनों के बीच दूरियां आ गईं। आखिरकार दोनों ने अपने रिश्ते को एक और मौका दिया और शादी कर ली। अब एक बेटी के माता-पिता बन चुके सिद्धार्थ और कियारा ने कॉफी विद करण 9% में अपनी प्रेम कहानी से जुड़े कई ऐसे पन्ने खोले हैं, जिनसे उनके फैंस अब तक अनजान थे। सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की प्रेम कहानी की शुरुआत एक पार्टी में हुई मुलाकात से हुई थी। दोनों की पहली मुलाकात उनके रिश्ते के सफर का शुरुआती पड़ाव रही। उस समय दोनों को शायद ही अंदाजा रहा होगा कि यह मुलाकात आगे चलकर उनके जीवन का इतना महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाएगी। बॉलीवुड की इस चर्चित जोड़ी की पहली मुलाकात से लेकर शादी तक का सफर कई दिलचस्प मोड़ों से होकर गुजरा। एक पार्टी में मुलाकात के बाद दोनों की नजदीकियां बढ़ीं और धीरे-धीरे उनकी प्रेम कहानी आगे बढ़ने लगी।अब कॉफी विद करण 9% में दोनों ने अपने रिश्ते के शुरुआती दिनों से जुड़ी बातों को साझा किया है। उनकी पहली मुलाकात से जुड़ा यह पहलू उनकी लव स्टोरी को और दिलचस्प बनाता है। सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की प्रेम कहानी में फिल्म शेरशाह का खास स्थान रहा है। इस फिल्म के सेट पर दोनों की नजदीकियां बढ़ीं। साथ काम करने के दौरान दोनों के रिश्ते को आगे बढ़ने का मौका मिला।फिल्मी पर्दे पर एक साथ नजर आने वाले सिद्धार्थ और कियारा के बीच वास्तविक जिंदगी में भी प्यार का रिश्ता आगे बढ़ने लगा। शेरशाह के सेट पर दोनों के बीच बढ़ती नजदीकियां उनकी प्रेम कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा बनीं।सिद्धार्थ और कियारा की लव स्टोरी को पसंद करने वाले फैंस के लिए यह जानना दिलचस्प है कि दोनों का रिश्ता पहली मुलाकात के बाद किस तरह आगे बढ़ा। फिल्म के सेट पर साथ बिताया गया समय उनकी प्रेम कहानी के खास पड़ावों में शामिल रहा। सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की प्रेम कहानी में सब कुछ हमेशा एक जैसा नहीं रहा। दोनों के रिश्ते में एक समय ऐसा भी आया,जब उनके बीच दूरियां बढ़ गईं। प्यार और नजदीकियों के बीच आए इस मोड़ ने उनकी लव स्टोरी को एक अलग दिशा दी।हर रिश्ते में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। सिद्धार्थ और कियारा के रिश्ते में भी दूरियों का एक दौर आया। हालांकि, दोनों की प्रेम कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। उन्होंने अपने रिश्ते को एक और मौका देने का फैसला किया। कॉफी विद करण में दोनों ने अपनी लव स्टोरी के इस पहलू से भी पर्दा उठाया है। उनके रिश्ते में आए ब्रेकअप और फिर एक-दूसरे के करीब आने की कहानी किसी फिल्मी कहानी की तरह लगती है। सिद्धार्थ और कियारा की प्रेम कहानी का सबसे खास पहलू यह है कि दोनों ने दूरियों के बाद अपने रिश्ते को एक और मौका दिया। रिश्ते में आए उतार-चढ़ाव के बावजूद दोनों ने एक-दूसरे के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया। सेकेंड चांस देने के बाद उनकी प्रेम कहानी एक नए पड़ाव पर पहुंची और आखिरकार दोनों ने शादी कर ली।

# करीना कपूर की थ्रिलर दायरा ओटीटी पर देने वाली है दस्तक

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान इन दिनों अपने फिल्मी करियर में अलग तरह के किरदारों को लेकर चर्चा में हैं। लंबे समय तक ग्लैमरस भूमिकाओं में दर्शकों का मनोरंजन करने वाली करीना अब थिएटर्स और ओटीटी पर गंभीर और चुनौतीपूर्ण किरदार निभाती नजर आ रही हैं। फिल्म जाने जान और द बकिंघम मर्डर्स के बाद अब अभिनेत्री मेघना गुलजार के निर्देशन में बनी फिल्म दायरा में डीसीपी अजूनी कोहली के किरदार में नजर आई हैं। इस फिल्म में करीना का अंदाज उनके पारंपरिक ग्लैमरस किरदारों से अलग है। लगातार गंभीर भूमिकाओं का चुनाव कर रही अभिनेत्री अपने अभिनय के एक नए पहलू को दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर रही हैं। करीना कपूर के फिल्मी सफर में यह बदलाव उनके किरदारों के चयन और अभिनय की विविधता को दर्शाता है। करीना कपूर खान बॉलीवुड की उन अभिनेत्रियों में शामिल हैं, जिन्होंने अलग-अलग तरह के किरदारों के जरिए दर्शकों के बीच अपनी पहचान बनाई है। ग्लैमरस भूमिकाओं के लिए चर्चित रहीं करीना अब ऐसी फिल्मों का हिस्सा बन रही हैं, जिनमें उन्हें गंभीर और भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण किरदार निभाने का अवसर मिल रहा है। जाने जान और द बकिंघम मर्डर्स के बाद दायरा भी उनके इसी फिल्मी सफर की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गई है। मेघना गुलजार के निर्देशन में बनी फिल्म दायरा में करीना कपूर खान डीसीपी अजूनी कोहली की भूमिका में नजर आई हैं। इस फिल्म में अभिनेत्री ने एक पुलिस अधिकारी का किरदार निभाया है। उनका यह किरदार उनके ग्लैमरस फिल्मी अंदाज से काफी अलग है।करीना के लिए डीसीपी अजूनी कोहली की भूमिका उनके अभिनय सफर में एक और नया अनुभव है। पुलिस अधिकारी के किरदार में गंभीरता,आत्मविश्वास और जिम्मेदारी जैसे पहलुओं को पर्दे पर प्रस्तुत करना किसी भी कलाकार के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। फिल्म दायरा के जरिए करीना कपूर एक बार फिर अपने अभिनय की विविधता दिखाती नजर आई हैं। यह फिल्म उनके हालिया गंभीर किरदारों की सूची में शामिल हो गई है।



## कोरियोग्राफर शेखर मास्टर की सलामती की जानी मास्टर ने की पुष्टि



जाने-माने डांस कोरियोग्राफर जानी मास्टर ने गुरुवार को बताया कि उनके साथी शेखर मास्टर,जो अभिनेता चिरंजीवी की फिल्म काका की शूटिंग से लौटते समय एक दुर्घटना का शिकार हो गए थे,अब ठीक हैं। वे गुरुवार शाम को ही फिल्म के सेट पर वापस लौट आएंगे। डांस कोरियोग्राफर शेखर मास्टर की सेहत के बारे में जानकारी देते हुए, जानी मास्टर ने अपने (ट्विटर) अकाउंट पर लिखा,कई करीबी लोगों के फोन आ रहे थे जो शकाका की शूटिंग से लौटते समय हुए शशेखरमास्टर के एक्सीडेंट के बारे में पूछ रहे थे। मैंने उनसे बात की है और मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वे बिल्कुल ठीक हैं। वे आज शाम को ही काका की शूटिंग में फिर से शामिल हो जाएंगे। आइए हम सब उनके अच्छे स्वास्थ्य और सभी की सलामती के लिए प्रार्थना करें। सुरक्षित रहें! ऐसी खबरें थीं कि डांस कोरियोग्राफर शेखर मास्टर एक दुर्घटना में मामूली रूप से घायल हो गए थे। यह दुर्घटना तब हुई जब फलों से लदे एक ट्रक ने पीछे से उनकी गाड़ी को टक्कर मार दी। बताया जा रहा है कि यह हादसा शमशाबाद के पास हुआ,जब कोरियोग्राफर फिल्म काका के एक गाने की कोरियोग्राफी पूरी करके वापस लौट रहे थे। बॉबी कोल्ली के निर्देशन में बन रही फिल्म काका को लेकर फैंस और सिनेमा प्रेमियों में काफी उत्साह है। फिल्म को लेकर यह उत्साह तब और बढ़ गया, जब हाल ही में निर्माताओं ने घोषणा की कि मशहूर बॉलीवुड निर्देशक और अभिनेता अनुराग कश्यप भी इस फिल्म से जुड़ गए हैं।

## खेल समाचार

# शिलांग लाजोंग और श्रीनिधि डेक्कन के बीच महामुकाबले की तैयारी

**शिलांग, 12 नवम्बर 2026।** फुटबॉल प्रतियोगिता में पिछले सीजन की उपविजेता और तीसरे स्थान पर रही टीमों के बीच एक महत्वपूर्ण मुकाबला होने जा रहा है। मौजूदा सीजन में अब तक अजेय रही शिलांग लाजोंग की टीम श्रीनिधि डेक्कन की मेजबानी करेगी। दोनों टीमों के बीच होने वाले इस मुकाबले को प्रतिस्पर्धा के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। शिलांग लाजोंग की कोशिश अपने अजेय अभियान को जारी रखने की होगी, जबकि श्रीनिधि डेक्कन मेजबान टीम को चुनौती देने के इरादे से मैदान पर उतरेगी। पिछले सीजन में शानदार प्रदर्शन करने वाली दोनों टीमों के बीच होने वाली भिड़ंत पर फुटबॉल प्रेमियों की विशेष नजर रहेगी।शिलांग लाजोंग ने मौजूदा सीजन में अब तक हार का सामना नहीं किया है। टीम अपने इसी प्रदर्शन को श्रीनिधि डेक्कन के खिलाफ होने वाले मुकाबले में भी बरकरार रखना चाहेगी। घरेलू मैदान पर होने वाले इस मुकाबले में शिलांग लाजोंग के पास अपने अजेय अभियान को आगे बढ़ाने का अवसर होगा। हालांकि, पिछले सीजन में शीर्ष तीन में जगह बनाने वाली श्रीनिधि डेक्कन के खिलाफ मेजबान टीम को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।



# भारत ने अफगानिस्तान को रौंदा

**अंडर-19 एशिया कप फाइनल में मारी ग्रैंड एंट्री पाकिस्तान से बदला लेने का मौका**

**अल अमरात, 12 नवम्बर 2026।** भारतीय टीम ने अंडर-19 एशिया कप 2026 के फाइनल में एंट्री मार ली है। अफगानिस्तान के खिलाफ हुए सेमीफाइनल को भारत ने 8 विकेट से अपने नाम किया। ओमान के अल अमरात में टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। अल अमरात क्रिकेट ग्राउंड पर पहले बैटिंग करते हुए अफगानिस्तान ने 8 विकेट पर 227 रन बनाए। भारतीय टीम ने विस्फोटक बैटिंग करते हुए 37वें ओवर में ही मुकाबला जीत लिया। अब भारतीय टीम फाइनल में पाकिस्तान से भिड़ेगी। ग्रुप राउंड में पाकिस्तान ने भारत को हराया था। 14 नवंबर को भारत के पास पाकिस्तान से बदला लेने का मौका होगा।

**आर्यवीर सहवाग समेत टॉप-3 की फिफ्टी**

भारतीय अंडर-19 टीम के लिए कप्तान लक्ष्य रायचंदानी के साथ ही आर्यवीर सहवाग और वीके विनीत के बल्ले से फिफ्टी निकली। दोनों



ही टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। 102 गेंदों पर पहले विकेट के लिए आर्यवीर और लक्ष्य ने 117 रनों की साझेदारी की। 56 गेंदों पर फिफ्टी पूरी करने के बाद आर्यवीर अगली ही गेंद पर आउट हो गए। जूनियर सहवाग ने 4 चौके और इतने ही छक्कों की मदद से 51 रनों की पारी खेली। कप्तान लक्ष्य शतक लगाने से चूक गए। वह 90 गेंदों पर 93 रन बनाकर आउट हुए। वहीं तीसरे नंबर पर उतरे विनीत ने 62 गेंदों पर 57 रनों की नाबाद पारी खेली। उन्होंने 5 चौके और एक छक्का लगाया। यशबर्धन चौहान 16 रन बनाकर नाबाद रहे।

**भारतीय गेंदबाज रहे जीत के हीरो**

ग्रुप राउंड के सभी तीन मैच जीतकर सेमीफाइनल में पहुंची अफगानिस्तान के बल्लेबाज कोई बड़ा कमाल नहीं कर पाए। सलामी बल्लेबाज अबिदुल्लाह नदरजन 14 रन बनाकर आउट हुए तो फरिदुल्लाह एहसान 13 रन ही बना सके। तीसरे नंबर पर उतरे सुभान जखैल के बल्ले से 31 रन निकले। विकेटकीपर नोमान सलरजई और शाह फैसल रहीमी ने फिफ्टी ठोकी। दोनों ही 51-51 रन बनाकर आउट हुए। निचले क्रम में कप्तान सोहैल खान ने नाबाद 36 रन बनाकर टीम को 227 रनों तक पहुंचा दिया। भारत के लिए ईशान सूद ने सबसे ज्यादा 3 विकेट लिए तो आर्यन सवसानी को दो विकेट मिले।

**कार्यालय वनमंडलाधिकारी मरवाही वनमंडल,पेंड्रारोड (छ.ग.)**

E-Mail-dfomarwahi@yahoo.com

**नीलाम-विज्ञापन**

सर्व सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि मरवाही वनमंडल, पेंड्रारोड के मड़ना डिपों एवं अन्य डिपों में निम्न विवरण अनुसार वनोपज ई-ऑक्सन द्वारा निवर्तन किया जाना है। इच्छुक व्यापारी ई-ऑक्सन में अवश्य भाग लेवें। ई-ऑक्सन की शर्तें एवं अन्य जानकारी कार्यालयीन दिवस व समय पर वनमण्डल कार्यालय अथवा मडना काष्ठागार से प्राप्त कर सकते हैं।

डिपों का नाम - मड़ना काष्ठागार
नीलाम दिनांक - 20.11.2026
नीलामी प्रारंभ - प्रातः 09.00 बजे से
वनोपज की अनुमानित मात्रा

| डिपों का नाम | प्रजाति | लता (घ.मी.) | | बल्ली नग | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | पुराना | नया | पुराना | नया |
| मडना डिपो | सागौन | 61.560 | 16.487 | 1102 | 268 |
| | साल | 467.499 | 59.773 | 756 | 86 |
| | साजा | 88.929 | 7.044 | 63 | - |
| | बीजा | 17.211 | 1.100 | 46 | - |
| | तिन्सा | 2.869 | 1.215 | - | - |
| | हल्दू/मु./ख | 21.000 | 4.565 | - | - |
| | धावडा | 2.743 | - | - | - |
| | सलिहा | 1.134 | - | - | - |
| | अन्य | 109.928 | 38.436 | 721 | 73 |
| | नीलगिरी | - | 1.500 | 806 | - |
| | R.T.L,साल साजा | 26.227 | - | - | - |
| | R.T.L,अन्य | 161.055 | - | - | - |
| | खैर | 1.552 | - | - | - |
| | योग - | 961.707 | 130.120 | 3494 | 427 |
| जलाऊ डिपो पेण्ड्रा | सतकठा जलाऊ | 108 | 93 | - | - |
| | योग - | 108,Chatta | 93,Chatta | - | - |

टीप -1. क्रेताओ को ई-ऑक्सन के पूर्व एम. एस. टी. सी. ई-कार्मस पोर्टल में रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है ।
2. क्रेताओ को ई-ऑक्सन के पूर्व क्रय लाटो के अपसेट प्राईज मूल्य के 10 प्रतिशत की राशि अपने वॉलेट में रखना अनिवार्य है। सफल बोलीदार को एक सप्ताह के भीतर शेष 15 प्रतिशत ई.एम.डी. की राशि जमा करना अनिवार्य है।
3. लाट की थप्पी सूची एवं फोटो एम.एस. टी. सी. ई-कार्मस पोर्टल में अपने आई.डी. से लॉगइन करके देख सकते है।

जी.नं.-262704453/2

वनमंडलाधिकारी
मरवाही वनमंडल,पेंड्रारोड

**नाम परिवर्तन सूचना**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैं पुराना नाम शबनम जहाँ पति अजहरुद्दीन अंसारी अपना पुराना नाम को बदल कर नया नाम शबनम जहाँ पति अज़हरुद्दीन अंसारी निवासी / पता नवागढ़ 153/ का, डबल मोबाईल टावर के बगल में अम्बिकापुर सरगुजा (छ0ग0) 497001 रख लिया हूँ ।

अतः अब मुझे भविष्य में समस्त शासकीय, अर्द्धशासकीय व अन्य दस्तावेजों में नया नाम शबनम जहाँ पति अज़हरबद्दीन अंसारी से जाना एवं पहचाना जाय ।

**शपथ कर्ता**

निवासी/पता नवागढ़ 153/ का, डबल मोबाईल टावर के बगल में अम्बिकापुर सरगुजा (छ0ग0)

**नाम परिवर्तन सूचना**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं रीना गुप्ता (RINA GUPTA) पति श्री कमलेश प्रसाद गुप्ता, उम्र 47 वर्ष, निवासी ग्राम झांसी, पोस्ट बसदेई, थाना सूरजपुर, जिला सूरजपुर (छत्तीसगढ़), अपने नाम में परिवर्तन कर रीता देवी गुप्ता (RITA DEVI GUPTA) रखना चाहती हूं।
मेरे जन्म प्रमाण पत्र में मेरा नाम रीता देवी गुप्ता (RITA DEVI GUPTA) अंकित है, अतः भविष्य में मुझे रीना गुप्ता के स्थान पर रीता देवी गुप्ता के नाम से जाना एवं पहचाना जाए, मेरे नाम से संबंधित सभी दस्तावेजों एवं अभिलेखों में आवश्यक संशोधन हेतु यह सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की जा रही है।

इस संबंध में मेरे द्वारा दिनांक 30 अक्टूबर 2026 को नोटरी, जिला सूरजपुर (छत्तीसगढ़) के समक्ष शपथ पत्र निष्पादित किया गया है।

अतः सर्वसाधारण एवं संबंधित विभागों से अनुरोध है कि उक्त नाम परिवर्तन को संज्ञान में लेते हुए भविष्य में मुझे रीता देवी गुप्ता के नाम से मान्यता प्रदान करें।

**सपथकर्ता**
**रीता देवी गुप्ता**

**नाम परिवर्तन सूचना**

मैं फरीदा बानो अली पति शेफुल्ला अली उम्र लगभग 45 वर्ष निवासी ग्राम हाऊस 0 77. नेहरू वार्ड कलेक्ट्रेट के पीछे इदगाह के पास सत्तीपरा अम्बिकापुर तहसील- अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 ।
यह कि मैं उपरोक्त पते का स्थायी निवासी हूँ, मेरा पुत्र नाम मुस्तफा अली MUSTFA ALLI है जो कि मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में अंकित है जो सत्य एवं सही है।

मेरे मेरे पुत्र आधार कार्ड न0 5767 7730 2976 में त्रुटिवश मेरे पुत्र का नाम शब्दार अब्बास SABDAR ABBAS अंकित हो गया है जो गलत है।

मेरा पुत्र का नाम शब्दार अब्बास SABDAR ABBAS के स्थान पर मेर पुत्र का सही नाम मुस्तफा अली MUSTFA ALLI अंकित किया जिस हेतु मै अपना स्वयं का शपथ पत्र प्रस्तुत कर रही हूँ।

**सपथकर्ता**
**फरीदा बानो अली**

**Name Change**

I, SHABANAM JAHAM W/O, AZHARUDDIN AMSARI Resident of NAWA-GARH 153/KA, NEXT TO DOUBLE MOBILE TOWER AMBIKAPUR hereby declare that have change d my name from SHABANAM JAHAN W/O AZHAR UDDIN ANSARI to... SHABNAM JAHAM W/O AZHARUDDIN ANSARE. in all the Government approved Identity proofs to be used for various

**Deponent**
SHABANAM JAHAM
NAWAGARH 153/KA,
NEXT TO DOUBLE
MOBILE TOWER
AMBIKAPUR.Surguja

# साय सरकार का फैसला...15 क्विंटल धान बेचने पर भी 21-क्विंटल का मिलेगा लाभ,किसानों को प्रति एकड़ 13,839 की अतिरिक्त सहायता मिलेगी

**रायपुर,12 नवम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ में धान के किसानों को लेकर साय सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। अगर किसान प्रति एकड़ 21 क्विंटल की जगह 15 क्विंटल धान बेचते हैं, तब भी उन्हें पूरे 21 क्विंटल की अंतर राशि मिलेगी। यानि किसान यदि कम धान बेच रहे हैं फिर भी उन्हें अंतर की राशि का पूरा लाभ मिलेगा। सरकार कृषक उन्नति योजना के तहत प्रति एकड़ 13,839 रुपए की अतिरिक्त सहायता देगी। इस फैसले से प्रदेश के धान के किसानों के साथ-साथ बस्तर और सरगुजा संभाग के किसानों को भी लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। छत्तीसगढ़ में 15 नवंबर 2026 से धान खरीदी की शुरुआत होने जा रही है। सरकार 3100 रुपए समर्थन मूल्य पर किसानों से धान खरीदेगी। पंजीकृत किसानों से 1 एकड़ में अधिकतम 21 क्विंटल धान लिया जाएगा। धान खरीदी का यह अभियान 31 जनवरी 2027 तक चलेगा। छत्तीसगढ़ में अब सहायता राशि सिर्फ इस आधार पर तय नहीं होगी कि किसान ने कितने क्विंटल धान बेचा है, बल्कि एग्रीस्टैक में पंजीकृत और डिजिटल क्रॉप सर्वे में दर्ज धान के रकबे के आधार पर भुगतान होगा। पात्र किसानों को प्रति एकड़ अधिकतम 21 क्विंटल धान के हिसाब से 13,839 रुपए की सहायता मिलेगी। यानी एक एकड़ में 15 क्विंटल धान बेचने वाले किसान को भी शेष 6 क्विंटल की अंतर राशि मिल सकेगी।

**इन किसानों के लिए भी किए गए प्रावधान :** खरीफ 2025-26 में धान नहीं बेचने वाले किसान इस साल धान बेचने आते हैं, तो उनके रकबे का सत्यापन जिला कलेक्टर करेंगे। जिन क्षेत्रों में डिजिटल क्रॉप सर्वे का डाटा उपलब्ध नहीं है, वहां कलेक्टर की अनुमति से गिरदावरी के आधार पर रकबा मान्य किया जा सकेगा। वहीं ट्रस्ट,निजी कंपनियों,शाला विकास समितियों,सरकारी संस्थानों और महाविद्यालयों जैसी संस्थाओं को योजना का लाभ नहीं मिलेगा। भुगतान कृषि भूमि सीलिंग कानून के प्रावधानों के अधीन होगा। कृषि विभाग के उपसंचालक और उनका अमला योजना की निगरानी और भुगतान की प्रक्रिया सुनिश्चित करेगा।

### पहले बिक्री के हिसाब से मिलती थी राशि

पहले किसान जितना धान बेचते थे, उसी मात्रा के आधार पर सहायता की गणना होती थी। नई व्यवस्था में सत्यापित रकबे को आधार बनाया गया है। इससे उन किसानों को राहत मिल सकती है,जिनकी फसल मौसम या अन्य कारणों से कम हुई है और वे निर्धारित 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान नहीं बेच पाए हैं।

### प्रति एकड़ 13,839 रुपए का गणित

सरकार ने धान की निर्धारित दर 3100 रुपए प्रति क्विंटल और कॉमन ग्रेड धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य 2441 रुपए के बीच के अंतर को सहायता का आधार बनाया है।

### टोकन लेते समय ही देना होगा आवेदन

योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को धान बेचने के दौरान सहकारी समिति में टोकन बनवाते समय आवेदन देना होगा। बिना आवेदन के सहायता राशि नहीं मिलेगी। मार्कफेड के माध्यम से पात्र किसानों के बैंक खातों में राशि भेजी जाएगी। किसानों को एग्रीस्टैक पंजीयन और डिजिटल क्रॉप सर्वे में दर्ज फसल के रकबे की जानकारी पहले ही जांचने की सलाह दी गई है।

### जनजातीय गौरव सप्ताह को लेकर सीएम साय ने दी जानकारी

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने गुरुवार को रायपुर स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर आयोजन की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती के उपलक्ष्य में 11 से 18 नवंबर तक देशभर में जनजातीय गौरव सप्ताह मनाया जा रहा है।

### बिरसा मुंडा के उलगुलान को किया याद

सीएम ने कहा कि बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करते हुए जल-जंगल-जमीन और जनजातीय स्वाभिमान की लड़ाई लड़ी। उन्होंने 'अबुआ दिशुम,अबुआ राज' का नारा दिया और उलगुलान यानी महाक्रांति का नेतृत्व किया। सीएम साय ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई 1857 से करीब 100 साल पहले ही जनजातीय वीरों ने शुरू कर दी थी। तिलका मांझी, सिद्धो-कान्हू, फूलो-झानो, वीर नारायण सिंह, टंट्या भील और रानी दुर्गावती जैसे नायकों के योगदान को लंबे समय तक इतिहास में पर्याप्त जगह नहीं मिली।




### 15 नवंबर को गांव से जिला स्तर तक आयोजन

सीएम ने बताया कि जनजातीय गौरव सप्ताह के दौरान 14 नवंबर को स्मारकों और प्रतिमाओं की सफाई के साथ दीपोत्सव होगा। 15 नवंबर को जिला स्तर पर जनजातीय नायकों की प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि दी जाएगी। 16 से 18 नवंबर तक विधानसभा क्षेत्रों में युवा संवाद और जनजातीय छात्रावास संपर्क अभियान चलाया जाएगा। इसके अलावा शोभायात्रा, प्रदर्शनी, खेलकूद और स्वाभिमान सम्मेलन भी होंगे। साय ने विपक्ष पर जनजातीय समाज को लंबे समय तक वोट बैंक की तरह इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत-2047 के विजन में जनजातीय समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रकार वार्ता में कृषि एवं आदिवासी विकास मंत्री रामविचार नेताम और औषधि पादप बोर्ड के अध्यक्ष विकास मरकाम भी मौजूद रहे।

### जनजातीय बजट में 231% की बढ़ोत्तरी का दावा

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय कार्य मंत्रालय का बजट 2014-15 में 4,497.96 करोड़ रुपए था,जो 2025-26 में बढ़कर 14,926 करोड़ रुपए हो गया है। उन्होंने पीएम जनमन,धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान, वन अधिकार पट्टे, पेसा कानून और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों को जनजातीय विकास की प्रमुख पहल बताया। साय के मुताबिक, 1.54 लाख आदि कर्मयोगी स्वयंसेवक 76,963 गांवों में योजनाओं को पहुंचाने का काम कर रहे हैं।

## छत्तीसगढ़ में एसआईआर के तहत ड्राफ्ट मतदाता सूची जारी

### प्रदेश में 1.90 करोड़ से अधिक वोटर पंजीकृत

**रायपुर,12 नवम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ में विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत मतदाता सूची का ड्राफ्ट 12 नवंबर 2026 को जारी कर दिया गया है। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर प्रदेश के सभी मतदान केंद्रों में निर्वाचक नामावली का प्रारूप प्रकाशित किया गया है। राजनीतिक दलों को भी इसकी हार्ड और सॉफ्ट कॉपी उपलब्ध करा दी गई है। मतदाता अब वोटर हेल्पलाइन मोबाइल ऐप और आधिकारिक वोटर पोर्टल के माध्यम से अपने मतदान केंद्र की सूची में नाम चेक कर सकते हैं। 12 नवंबर को प्रकाशित प्रारूप मतदाता सूची के अनुसार छत्तीसगढ़ में कुल 1 करोड़ 90 लाख 16 हजार 768 मतदाता पंजीकृत हैं। इनमें 94 लाख 84 हजार 635 पुरुष, 95 लाख 31 हजार 721 महिला और 412 थर्ड जेंडर मतदाता शामिल हैं। मतदान केंद्रों के युक्तियुक्तकरण के बाद प्रदेश में कुल मतदान केंद्रों की संख्या 26 हजार 854 हो गई है। इससे पहले राज्य में 27 हजार 196 मतदान केंद्र थे। पुनरीक्षण प्रक्रिया के तहत 47 नए मतदान केंद्र बनाए गए, जबकि 389 केंद्रों को विलोपित किया गया है। वर्तमान में प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में 5,876 और ग्रामीण क्षेत्रों में 20,978 मतदान केंद्र हैं।



### ऐसे चेक करें मतदाता सूची में अपना नाम

निर्वाचन प्रक्रिया के तहत मतदाताओं से अपील की गई है कि वे ड्राफ्ट सूची में अपना नाम और अन्य विवरण जरूर जांच लें। इसके लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों विकल्प उपलब्ध हैं।

- **ऑनलाइन :** वोटर हेल्पलाइन मोबाइल ऐप या आधिकारिक वोटर पोर्टल के माध्यम से मतदान केंद्रवार सूची देख सकते हैं।
- **ऑफलाइन :** अपने क्षेत्र के बूथ लेवल ऑफिसर से संपर्क कर सकते हैं।
- **हेल्पलाइन :** टोल-फ्री नंबर 1950 पर कॉल करके भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

## सौरभ चंद्राकर को आज स्पेशल कोर्ट में किया जाएगा पेश

### पीएमएलए कोर्ट ने ईडी का आवेदन किया स्वीकार,कस्टोडियल रिमांड पर लेकर होगी पूछताछ

**रायपुर,12 नवम्बर 2026।** जेल में बंद महादेव ऑनलाइन सट्टा ऐप केस के मुख्य आरोपी सौरभ चंद्राकर को शुक्रवार को प्रोडक्शन वारंट पर रायपुर जेल से ईडी की स्पेशल कोर्ट में पेश किया जाएगा। सीबीआई कोर्ट से आवेदन खारिज होने के बाद ईडी ने पीएमएलए स्पेशल कोर्ट में आवेदन लगाया था। कोर्ट ने ईडी के आवेदन को स्वीकार कर लिया है। कल पुलिस की टीम सौरभ को रायपुर जेल से ईडी कोर्ट लेकर पहुंचेगी। यहां पेशी के बाद ईडी उसे कस्टोडियल रिमांड पर लेने की मांग करेगी, ताकि उससे पूछताछ की जा सके। बता दें कि 8 दिन की कस्टोडियल रिमांड खत्म होने के बाद सौरभ को आज फिर रायपुर की स्पेशल कोर्ट में पेश किया गया था। सीबीआई ने दोबारा कस्टडी नहीं मांगी और उसे न्यायिक रिमांड पर भेजने की मांग की। जहां से उसे 19 नवंबर तक ज्यूडिशियल रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। सीबीआई अधिकारी और पुलिस हाई सिक्योरिटी के बीच सौरभ को लेकर कोर्ट पहुंचे। कोर्ट से आदेश मिलने के बाद उसे जेल भेज दिया गया। इस दौरान वह झोला उठाकर जेल के अंदर जाता दिखा।




### 8 दिन की पूछताछ में इन पहलुओं पर जांच

सीबीआई ने सौरभ से महादेव ऐप के नेटवर्क, पैनल ऑपरेटरों, हवाला के जरिए हुए लेनदेन और कथित प्रोटेक्शन मनी को लेकर पूछताछ की है। जांच एजेंसी को यह पता लगाना है कि सट्टे से जुटाई गई रकम किन लोगों तक पहुंची और इस पूरे नेटवर्क में किन अधिकारियों और अन्य लोगों की भूमिका थी।

### 2022 में दर्ज हुई थी पहली एफआईआर

महादेव ऑनलाइन सट्टा ऐप मामले में 30 मार्च 2022 को दुर्ग के मोहन नगर थाने में पहली एफआईआर दर्ज हुई थी। इसके बाद ईडी ने 6 अक्टूबर 2022 को मनी लॉन्ड्रिंग के एंगल से जांच शुरू की। मामले में सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल को मुख्य आरोपियों के तौर पर चिन्हित किया गया। सीबीआई ने 18 दिसंबर 2024 को इस मामले में केस दर्ज किया था। जांच में ऑनलाइन सट्टे के नेटवर्क, पैनल ऑपरेटरों, बैंक खातों और हवाला के जरिए रकम के लेनदेन की पड़ताल की जा रही है।

### महादेव सट्टा ऐप की सीबीआई कर रही जांच

बता दें कि महादेव सट्टा ऐप से जुड़े मामलों की जांच सीबीआई कर रही है। छत्तीसगढ़ सरकार ने इस मामले से जुड़ी 13 एफआईआर जांच के लिए सीबीआई को सौंपी थीं। इनमें से 2 मामलों में चार्जशीट दाखिल हो चुकी है। इसके अलावा ईडी भी मनी लॉन्ड्रिंग के एंगल से जांच कर रही है और सौरभ के खिलाफ अभियोजन शिकायत दाखिल कर चुकी है।

### 116 दिन बाद ओमान से भारत लाया गया

सीबीआई के मुताबिक, महादेव सट्टा नेटवर्क की जांच शुरू होने के बाद से ही सौरभ चंद्राकर फरार था। वह 2023 से दुबई में रह रहा था और उसके खिलाफ इंटरपोल का रेड कॉर्नर नोटिस जारी था। गिरफ्तारी से बचने के लिए उसने कथित तौर पर फर्जी पहचान दस्तावेजों का इस्तेमाल किया और यूएई से ओमान पहुंच गया। उसके कथित फर्जी इंडोनेशियाई पासपोर्ट की जानकारी मिली थी। इसमें उसकी फोटो थी, लेकिन नाम 'अजंता मेंडिस' लिखा था, जो श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर अजन्ता मेंडिस से मिलता-जुलता है। पासपोर्ट में जन्मतिथि भी दूसरे दस्तावेजों से अलग थी। खुफिया जानकारी और रेड कॉर्नर नोटिस के आधार पर 8 जुलाई 2026 को ओमान की रॉयल पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया। इसके बाद सीबीआई और ईडी ने भारत सरकार के जरिए ओमान को प्रत्यर्पण का औपचारिक प्रस्ताव भेजा और सबूत सौंपे। भारत सरकार की एजेंसियों, इंटरपोल और ओमान के अधिकारियों के बीच बातचीत के बाद प्रत्यर्पण को मंजूरी मिली। इसके बाद सीबीआई की टीम मस्कट पहुंची और 1 नवंबर को उसे भारत लेकर आई थी। ओमान में हिरासत के दौरान सौरभ चंद्राकर ने भारत की जेल में अपनी जान को खतरा होने की आशंका जताई थी। उसने अपने परिवार की सुरक्षा की मांग भी की थी। सौरभ का दावा था कि महादेव सट्टा नेटवर्क से जुड़े प्रभावशाली लोग उसे और उसके परिवार को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

## 7 पटवारी सस्पेंड, 229 को काम पर लौटने का नोटिस

### रायपुर,तिल्दा,आरंग और अभनपुर में कार्रवाई लोगों की परेशानी को देखते हुए प्रशासन सख्त

**रायपुर,12 नवम्बर 2026।** काम पर नहीं लौटने वाले पटवारियों के खिलाफ जिला प्रशासन ने कार्रवाई शुरू कर दी है। जिले में अब तक 7 पटवारियों को सस्पेंड किया जा चुका है, जबकि 229 पटवारियों को नोटिस जारी कर काम पर लौटने के निर्देश दिए गए हैं। यह कार्रवाई रायपुर, तिल्दा, आरंग और अभनपुर अनुविभाग में की गई है। प्रशासन का कहना है कि पटवारियों के काम पर नहीं लौटने से राजस्व संबंधी काम प्रभावित हो रहे हैं और आम लोगों को परेशानी हो रही है। जिला प्रशासन के मुताबिक, रायपुर तहसील में एक पटवारी को सस्पेंड किया गया है और 51 को नोटिस जारी किया गया है। धरसींवा तहसील में 30 पटवारियों को नोटिस दिया गया है। तिल्दा में एक पटवारी को सस्पेंड करने के साथ 48 को नोटिस जारी किया गया है। वहीं आरंग में 2 पटवारी सस्पेंड किए गए हैं और 57 को नोटिस दिया गया है। अभनपुर में 3 पटवारियों को सस्पेंड किया गया है। इनमें गोबरा नवापारा तहसील का एक और अभनपुर तहसील के दो पटवारी शामिल हैं। इसके अलावा गोबरा नवापारा के 19 और अभनपुर तहसील के 24 पटवारियों को नोटिस जारी किए गए हैं।

## छत्तीसगढ़ विधानसभा का शीतकालीन सत्र 14 दिसंबर से

### 4 दिन में 4 बैठकें,सदन की कार्यवाही होगी डिजिटल,सत्र से पहले दी गई ट्रेनिंग

**रायपुर,12 नवम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ विधानसभा का शीतकालीन सत्र 14 से 17 दिसंबर तक चलेगा। छठवीं विधानसभा के 11वें सत्र में चार दिन में कुल 4 बैठकें होंगी। इस दौरान प्रदेश के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा होगी और सरकार से सवाल-जवाब किए जाएंगे। वहीं, विधानसभा को डिजिटल और पेपरलेस बनाने की तैयारी भी तेज हो गई है। इसी कड़ी में 3 और 4 नवंबर को अधिकारियों-कर्मचारियों को राष्ट्रीय ई-विधान एप्लीकेशन के इस्तेमाल की ट्रेनिंग दी गई। इसका उद्देश्य विधानसभा के कामकाज में डिजिटल व्यवस्था को बढ़ावा देना और अधिकारियों-कर्मचारियों को इस प्लेटफॉर्म के इस्तेमाल की जानकारी देना था।



**प्रश्न और दस्तावेज ऑनलाइन भेजने का दिया प्रशिक्षण :** प्रशिक्षण के दौरान भारत सरकार के संसदीय कार्य मंत्रालय के राष्ट्रीय ई-विधान एप्लीकेशन समन्वयक अमन गौतम और श्रीधर स्वामी ने एप्लीकेशन के अलग-अलग हिस्सों की जानकारी दी। इसमें एडमिन, प्रश्न और समिति मॉड्यूल शामिल थे। अधिकारियों और कर्मचारियों को बताया गया कि ऑनलाइन माध्यम से प्रश्न और सूचनाएं कैसे भेजी जाएंगी। इसके अलावा विधानसभा से जुड़े दस्तावेजों को ऑनलाइन संभालने, सदन की कार्यवाही की जानकारी साझा करने और राष्ट्रीय ई-विधान एप्लीकेशन की दूसरी सुविधाओं का इस्तेमाल करने का तरीका भी बताया गया। इस प्रशिक्षण में विधानसभा, चिप्स और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के अधिकारी-कर्मचारी शामिल हुए। राष्ट्रीय ई-विधान एप्लीकेशन भारत सरकार के संसदीय कार्य मंत्रालय की डिजिटल पहल है। इसका उद्देश्य देश की विधानसभाओं को आधुनिक तकनीक से जोड़ना और विधायी कामकाज को डिजिटल और पेपरलेस बनाना है। इसके जरिए सदन की कार्यवाही, प्रश्न, सूचनाएं और विधायी दस्तावेज डिजिटल माध्यम से उपलब्ध कराए जा सकते हैं। विधानसभा में आयोजित यह प्रशिक्षण डिजिटल व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। हालांकि, 14 से 17 दिसंबर तक होने वाला पूरा शीतकालीन सत्र पेपरलेस होगा या नहीं, इसकी आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है।

## मध्यप्रदेश की अधिकारी वंदना मेहरा अटूट सुकमा अपर कलेक्टर नियुक्त...GAD ने जारी किया आदेश दो साल की प्रतिनियुक्ति पर आईं छत्तीसगढ़



**रायपुर,12 नवम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ सरकार ने मध्यप्रदेश की राज्य प्रशासनिक सेवा की अधिकारी वंदना मेहरा अटूट को सुकमा जिले का अपर कलेक्टर नियुक्त किया है। वे अभी मध्यप्रदेश शासन के पशुपालन एवं डेयरी विभाग में उप सचिव के पद पर पदस्थ थीं। उन्हें दो साल के लिए प्रतिनियुक्ति पर छत्तीसगढ़ भेजा गया है। सामान्य प्रशासन विभाग ने गुरुवार को इस संबंध में आदेश जारी किया है। उनकी नियुक्ति मध्यप्रदेश शासन के पशुपालन एवं डेयरी विभाग के 27 अक्टूबर 2026 को भेजे गए पत्र में तय शर्तों के आधार पर की गई है। वंदना मेहरा अटूट मध्यप्रदेश के रायसेन की रहने वाली हैं। वह वर्ष 2008 बैच की राज्य प्रशासनिक सेवा की अधिकारी हैं। छत्तीसगढ़ में प्रतिनियुक्ति पर आने से पहले वह मध्यप्रदेश शासन के पशुपालन एवं डेयरी विभाग में उप सचिव के पद पर कार्यरत थीं। बता दें कि भाजपा सरकार बस्तर को डेयरी हब बनाने की दिशा में काम कर रही है। वंदना मेहरा अटूट की प्रतिनियुक्ति को उसी से जोड़कर देखा जा रहा है।

## दीपक बैज का सरकार पर हमला,बोले... छत्तीसगढ़ में हर वर्ग आंदोलन करने को मजबूर

**जगदलपुर,12 नवम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ में लगातार हो रहे आंदोलनों को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने सरकार पर निशाना साधा है। उनका आरोप है कि प्रदेश में आज हर वर्ग अपनी मांगों को लेकर सड़कों पर उतरने को मजबूर है। जगदलपुर में पटवारी और छात्रावास अधीक्षक आंदोलन कर रहे हैं। किसान अपनी समस्याओं को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। वहीं आरक्षक भर्ती के अभ्यर्थी भी सरकार के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। दीपक बैज ने ड्राइवर संघ के 14 सूत्रीय मांगों को लेकर जारी अनिश्चितकालीन 'स्टेयरिंग छोड़ो आंदोलन' का जिक्र करते हुए कहा कि छोटे वाहनों से लेकर बसों तक का संचालन प्रभावित है। यात्रियों को परेशानी हो रही है। स्कूल बसें बंद होने से बच्चों की पढ़ाई और आवाजाही पर भी असर पड़ रहा है। उन्होंने सरकार से ड्राइवर संघ के साथ बातचीत कर मांगों का समाधान निकालने और परिवहन व्यवस्था बहाल करने की अपील की है।

## 1.74 करोड़ का सोना चुराकर जंगल में छिपा पूरा परिवार...ड्रोन-थर्मल कैमरे से खोजा,पुलिस ने 5 को पकड़ा,नाबालिग लड़की भी शामिल

**जगदलपुर,12 नवम्बर 2026।** जगदलपुर के संजय मार्केट स्थित मोती ज्वेलर्स में हुई सोने के आभूषणों की चोरी का पुलिस ने खुलासा किया है। पुलिस ने मामले में 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है,जबकि एक नाबालिग लड़की को हिरासत में लेकर कोर्ट में पेश किया गया है। आरोपियों के कब्जे से चोरी के 765.7 ग्राम सोने के आभूषण बरामद किए गए हैं। वारदात में इस्तेमाल स्कॉर्पियो, ऑटो और बाइक भी जब्त की गई हैं। पुलिस के मुताबिक, सभी गिरफ्तार आरोपी एक ही परिवार के हैं। चोरी के बाद आरोपी जंगल में छिप गए थे। पुलिस ने ड्रोन और थर्मल कैमरों की मदद से उनकी तलाश की और गिरफ्तार किया। गिरोह के 3 अन्य आरोपी अभी फरार हैं। मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है।



**त्योहार की भीड़ का उठाया फायदा :** पुलिस के मुताबिक, 7 नवंबर को शाम करीब 4:30 बजे संजय मार्केट स्थित मोती ज्वेलर्स में त्योहार के कारण ग्राहकों की भीड़ थी। इसी दौरान महिलाओं और बच्चों का एक समूह दुकान पहुंचा। महिलाओं ने आभूषण देखने के बहाने दुकानदार का ध्यान भटकाया। इसी बीच



एक महिला ने दराज में रखा सोने के आभूषणों से भरा प्लास्टिक का बॉक्स निकालकर एक नाबालिग लड़की को दे दिया। इसके बाद पूरा ग्रुप दुकान से निकल गया। शाम करीब 7:30 बजे दुकानदार को सोने के टॉप्स वाला बॉक्स नहीं मिला। इसके बाद दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज देखी गई। फुटेज में महिलाओं और बच्चों के समूह की गतिविधियां सामने आईं। दुकानदार की शिकायत पर कोतवाली थाने में केस दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू की।

**स्कॉर्पियो के जरिए गिरोह तक पहुंची पुलिस :** जांच के दौरान पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और तस्वीरों के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू की। साइबर सेल की मदद और मुखबिर से मिली सूचना पर सफेद रंग की स्कॉर्पियो (CG 17 C 3511) की पहचान की गई। वाहन मालिक से पूछताछ में पता चला कि उसने स्कॉर्पियो दुआ मोटर्स में बेची थी। वहां जानकारी जुटाने पर पता चला कि यह वाहन मासों कश्यप निवासी पथरीली उड़वा, कोड़ेनार ने खरीदा था। इसके बाद सीएसपी अंशिका जैन ने 4 स्पेशल टीमें बनाई। पुलिस टीमों ने कोड़ेनार क्षेत्र के पथरीली उड़वा गांव में दबिश दी। हालांकि, पुलिस के पहुंचने से पहले ही संदिग्ध चोरी का सामान लेकर जंगल की ओर भाग गए थे।

**जंगल में ड्रोन और थर्मल कैमरे से तलाश :** आरोपियों के जंगल में छिपे होने की सूचना पर पुलिस ने रात में इलाके की घेराबंदी की। घना जंगल और बड़ी घास होने के कारण उनकी तलाश में परेशानी हुई। इसके बाद थर्मल कैमरे और ड्रोन की मदद से संभावित ठिकानों पर नजर रखी गई। पुलिस की अलग-अलग टीमों ने पैदल गश्त कर आरोपियों की तलाश की। इस दौरान पुलिस ने संदिग्धों को अलग-अलग जगहों से पकड़ा और पूछताछ की। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने चोरी की वारदात कबूल कर ली। उनकी निशानदेही पर चोरी किए गए सोने के आभूषण भी बरामद किए गए।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)